



CHETANA
International Journal of Education (CIJE)

Peer Reviewed/Refereed Journal
ISSN : 2455-8279 (E)/2231-3613 (P)

Impact Factor
SJIF 2026-8.584



Prof. A.P. Sharma
Founder Editor, CIJE
(25.12.1932 - 09.01.2019)

कागज़ पर नियमित, व्यवहार में अनुपस्थित: बी.एड. डिग्री का व्यावसायीकरण,
पाठ्यचर्या की प्रभावहीनता और नियमित प्रशिक्षण की भूमिका (नाटकीय प्रस्तुति सहित)

अश्विनी कुमार 'सुकरात'

सहायक प्रोफेसर (एड-हॉक)

महर्षि वाल्मीकि कॉलेज ऑफ़ एजुकेशन दिल्ली विश्वविद्यालय

Email - ashwini.edu21@gmail.com, Mobile-9643273515

First draft received: 18.08.2026, Reviewed: 22.08.2026

Final proof received: 25.08.2026, Accepted: 20.09.2026

सारांश

दो वर्षीय बी.एड. कार्यक्रम 2015-16 सत्र से लागू हुआ, पर शिक्षक-शिक्षा की गुणवत्ता से जुड़े प्रश्न इसके बाद भी बने रहे। सर्वोच्च न्यायालय द्वारा गठित जस्टिस जे.एस. वर्मा आयोग ने 2012 में दर्ज किया था कि अधिकांश एकल शिक्षक-शिक्षा संस्थान गंभीर शिक्षक-शिक्षा का प्रयास नहीं कर रहे थे और शुल्क के बदले डिग्री दे रहे थे। 2018 से 2026 तक के संसदीय उत्तर, नियामक आदेश, न्यायालयी निर्णय से जुड़ी रिपोर्ट और खोजी समाचार-रिपोर्टें बताती हैं कि अवधि बढ़ने के बाद भी उपस्थिति, विद्यालय-इंटर्नशिप, संकाय और निरीक्षण की कागज़ी पूर्ति की समस्या बनी रही। दूसरी ओर, दो वर्षीय कार्यक्रम पर हुए अध्ययनों की एक समीक्षा के अनुसार अधिकांश विद्यार्थी-शिक्षकों का दृष्टिकोण इस कार्यक्रम के प्रति अनुकूल नहीं रहा।

यह लेख इन दोनों प्रवृत्तियों को दो वर्षीय बी.एड. पाठ्यचर्या की प्रभावहीनता की समस्या के रूप में देखता है। अध्ययन पूर्व शोध, नीति-दस्तावेजों, संसदीय अभिलेखों और प्रकाशित रिपोर्टों के समेकित विश्लेषण पर आधारित है। इसमें कोई साक्षात्कार या मैदानी सामग्री शामिल नहीं है। विश्लेषण के बीच व्यंग्यात्मक-संगीतमय नाटक 'चले मुरारी-त्रिपुरारी शिक्षक बनने' रखा गया है, जो इन्हीं प्रवृत्तियों को दो मित्रों की कथा में रचता है। त्रिपुरारी सुविधा-पैकेज वाले निजी संस्थान से डिग्री लेता है, जबकि मुरारी एक सरकार अनुदानित शिक्षा महाविद्यालय में नियमित प्रशिक्षण से गुज़रता है।

विश्लेषण से यह निष्कर्ष उभरता है कि पाठ्यचर्या की प्रभावहीनता उसकी बनावट से अधिक उसके क्रियान्वयन और ग्रहण से पैदा होती है। विद्यालय-इंटर्नशिप, चिंतनशील डायरी, सतत आकलन, पाठ-योजना और क्रियात्मक शोध जैसे घटक जब कागज़ी उत्पाद या औपचारिकता बन जाते हैं, तब दो वर्ष की अवधि भी गुणवत्ता सुनिश्चित नहीं कर पाती। इन घटकों का उद्देश्य नियमित और पेशेवर शिक्षण-प्रशिक्षण से ही साकार होता है।

मुख्य शब्द - बी.एड. पाठ्यचर्या, शिक्षक-शिक्षा, डिग्री का व्यावसायीकरण, जस्टिस वर्मा आयोग, NCTE विनियम 2014, विद्यालय-इंटर्नशिप, चिंतनशील अभ्यास, कला-आधारित शोध

प्रस्तावना और शोध-समस्या

बी.एड. की गुणवत्ता पर बहस नई नहीं है। सर्वोच्च न्यायालय द्वारा गठित जस्टिस जे.एस. वर्मा आयोग ने दर्ज किया था कि दस हजार से अधिक एकल शिक्षक-शिक्षा संस्थानों (stand-alone institutions) में से अधिकांश गंभीर शिक्षक-शिक्षा का प्रयास नहीं कर रहे थे और शुल्क के बदले डिग्री दे रहे थे (Ministry of Human Resource Development [MHRD], 2012, as cited in Rajput, 2021)। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 (NEP) में भी आयोग के इस निदान का उल्लेख है (Rajput, 2021)। इन अभिलेखों में एक ऐसी स्थिति दर्ज है जिसमें नामांकन, शुल्क और फाइलें मौजूद रहती हैं, पर शिक्षक बनने की प्रक्रिया अनुपस्थित रहती है।

दूसरी स्थिति नियमित कार्यक्रमों से जुड़ी है। दो वर्षीय बी.एड. पर हुए दस अध्ययनों की समीक्षा के अनुसार शिक्षक-प्रशिक्षक इस कार्यक्रम को प्रभावी मानते हैं, जबकि अधिकांश विद्यार्थी-शिक्षकों का दृष्टिकोण इसके प्रति अनुकूल नहीं है (Mondal, 2020)। यह लेख इस प्रतिकूलता को प्रतियोगी परीक्षाओं की तैयारी के संदर्भ में समझने का प्रयास करता है। जो विद्यार्थी साथ-साथ कई प्रतियोगी परीक्षाओं की तैयारी करता है, उसके लिए नियमित कक्षा, दत्त-कार्य

(assignment), चिंतनशील डायरी और बीस सप्ताह की विद्यालय-इंटर्नशिप अतिरिक्त समय की मांग करती हैं। ऐसी स्थिति में यह अनुभूति बन सकती है कि पेशेवर प्रशिक्षण तैयारी के मार्ग में बाधा है। इस लेख में इसे 'जुल्म' की अनुभूति कहा गया है।

दोनों स्थितियों के बीच एक साझा सूत्र दिखाई देता है: डिग्री को शिक्षक-शिक्षा की प्रक्रिया से अलग वस्तु मान लेना। जब भर्ती में बी.एड. केवल पात्रता की शर्त हो और चयन मुख्यतः लिखित परीक्षा से तय हो, तब पाठ्यचर्या के अभ्यास-आधारित घटक अभ्यर्थी को अनिवार्य, पर चयन से असंबद्ध दिखाई दे सकते हैं। यह इस लेख का विश्लेषणात्मक प्रस्थान-बिंदु है, जिसे आगे उपलब्ध साध्यों की कसौटी पर परखा गया है।

इसी पृष्ठभूमि में इस लेख की शोध-समस्या है: दो वर्षीय बी.एड. पाठ्यचर्या की प्रभावहीनता, डिग्री के व्यावसायीकरण और 'सब औपचारिकता है' वाली मानसिकता के बीच, एक नियमित सरकार अनुदानित शिक्षा महाविद्यालय के उदाहरण से। लेख यह जाँचता है कि प्रभावहीनता पाठ्यचर्या की बनावट में है या उसके क्रियान्वयन और ग्रहण में।

यह प्रश्न बच्चों के शिक्षा-अधिकार से भी जुड़ा है। एक विधिक समाचार-रिपोर्ट के अनुसार सर्वोच्च न्यायालय ने सितंबर 2026 के एक निर्णय में शिक्षक-शिक्षा संस्थानों और राष्ट्रीय अध्यापक शिक्षा परिषद (NCTE) को शिक्षा के अधिकार की संरचना में कर्तव्य-धारक माना। रिपोर्ट के अनुसार न्यायालय ने यह भी रेखांकित किया कि शिक्षक-तैयारी की गुणवत्ता का सीधा प्रभाव प्रारंभिक शिक्षा की प्रभावशीलता पर पड़ता है (India Legal, 2026)।

शोध के उद्देश्य, प्रश्न और पद्धति

यह अध्ययन गुणात्मक और दस्तावेज़-आधारित है। इसमें पूर्व शोध, नीति-दस्तावेज़ों, संसदीय अभिलेखों, नियामक आदेशों और प्रकाशित रिपोर्टों से प्राप्त जानकारी का समेकित विश्लेषण किया गया है। अध्ययन के लिए कोई साक्षात्कार, सर्वेक्षण या मैदानी अवलोकन नहीं किया गया।

उद्देश्य

1. एक वर्षीय से दो वर्षीय बी.एड. तक की नीतिगत यात्रा, आयोग की सिफारिशों और NCTE की भूमिका का विश्लेषण करना।
2. 2015 के बाद उपस्थिति, विद्यालय-इंटरनेट, संकाय और निरीक्षण की कागज़ी पूर्ति से जुड़े दस्तावेज़ी साक्ष्यों की पहचान करना।
3. डिग्री के व्यावसायीकरण और नियमित कार्यक्रम के प्रति प्रतिकूल अनुभूति, इन दोनों प्रवृत्तियों के भीतरी तर्क को नाट्य-रूप में प्रस्तुत करना।
4. पाठ्यचर्या के घटकों के उद्देश्यों के आधार पर स्पष्ट करना कि वे किन परिस्थितियों में प्रभावी और किनमें प्रभावहीन होते हैं।

शोध-प्रश्न

1. अवधि दोगुनी होने के बाद भी बी.एड. की गुणवत्ता से जुड़ी समस्या क्यों बनी रही?
2. डिग्री का व्यावसायीकरण पाठ्यचर्या के किन घटकों को सबसे सरलता से खरीदने योग्य बना देता है, और क्यों?
3. नियमित महाविद्यालय में पाठ्यचर्या किन शर्तों पर बोझ के बजाय पेशेवर तैयारी बनती है?

पद्धति

विश्लेषण की पहली धारा दस्तावेज़ी है। इसमें अध्यापक-शिक्षा के लिए राष्ट्रीय पाठ्यचर्या रूपरेखा 2009 (NCFTE), जस्टिस वर्मा आयोग की रिपोर्ट से जुड़े अभिलेख, NCTE विनियम 2014, संसदीय उत्तर, NCTE के आदेश, सर्वोच्च न्यायालय के निर्णय की रिपोर्ट और 2018 से 2026 तक की समाचार-रिपोर्टें शामिल हैं। स्रोतों को उनके स्वरूप के अनुसार अलग पहचाना गया है: आधिकारिक अभिलेख, शोध-साहित्य, समाचार-रिपोर्ट और इस लेख का अपना विश्लेषण। जहाँ कोई आँकड़ा किसी दूसरे अध्ययन के हवाले से आया है, वहाँ उसे उसी द्वितीयक रूप में लिखा गया है।

विश्लेषण की दूसरी धारा कला-आधारित शैक्षिक शोध (arts-based educational research) की है। इस परंपरा में कलात्मक रचना को समझ विकसित करने और विमर्श खोलने का माध्यम माना जाता है (Barone & Eisner, 2012)। शोध-आधारित नाट्य की कुछ परंपराएँ साक्षात्कार और मैदानी सामग्री को नाटक में बदलती हैं (Saldaña, 2011)। इस लेख का नाटक ऐसी सामग्री पर आधारित नहीं है। वह दस्तावेज़ी विश्लेषण से उभरी प्रवृत्तियों की कलात्मक रचना है, जिसके पात्र, संस्थाएँ और प्रसंग काल्पनिक हैं। नाटक की भाषा नाट्य-आवश्यकता के अनुसार बोलचाल की है, जबकि शेष लेख की भाषा अकादमिक है।

लेख का क्रम इसी पद्धति से निकला है। पहले समस्या और उसका ऐतिहासिक संदर्भ आता है, फिर 2015 के बाद के साक्ष्य, फिर नाटक, और अंत में नाटक का निष्कर्ष, विमर्श तथा शोध-लेख का निष्कर्ष। इस क्रम में नाटक दस्तावेज़ी विश्लेषण का कलात्मक रूप भी है और विमर्श का आधार भी।

नैतिक सावधानी और सीमाएँ

लेख में किसी वास्तविक शिक्षा महाविद्यालय का नाम नहीं लिया गया है। नियमित महाविद्यालय को केवल 'सरकार अनुदानित शिक्षा

महाविद्यालय' कहा गया है। समाचार-रिपोर्टों में नामित निजी संस्थानों के नाम भी नहीं दोहराए गए। नाटक के निजी कॉलेज, एजेंट, शुल्क-पैकेज और झुमरी तलैया का सरकारी कॉलेज काल्पनिक हैं। समाचार-रिपोर्टें द्वितीयक स्रोत हैं और कुछ आँकड़े दूसरे अध्ययनों के हवाले से आए हैं। इसलिए निष्कर्ष प्रवृत्तियों की व्याख्या है, किसी राज्य या संस्था का सांख्यिकीय चित्र नहीं।

ऐतिहासिक पृष्ठभूमि: एक वर्ष से दो वर्ष का बी.एड.

बी.एड. की अवधि 2015-16 सत्र से दो वर्ष हुई (Mondal, 2020)। इस परिवर्तन तक पहुँचने में वैधानिक नियमन की स्थापना, निजी संस्थानों के विस्तार, अवधि बढ़ाने की संस्थागत माँग और सर्वोच्च न्यायालय के हस्तक्षेप, चारों की भूमिका रही।

वैधानिक नियमन और संस्थानों का विस्तार

NCTE, राष्ट्रीय अध्यापक शिक्षा परिषद अधिनियम 1993 के तहत 17 अगस्त 1995 को वैधानिक निकाय के रूप में अस्तित्व में आई। उसके वैधानिक कार्यों में मानदंड तय करना, मान्यता-प्राप्त संस्थानों पर जवाबदेही लागू करने की व्यवस्था बनाना और शिक्षक-शिक्षा के व्यावसायीकरण को रोकने के लिए आवश्यक कदम उठाना शामिल है (National Council for Teacher Education [NCTE], n.d.-a)।

इसके बाद संस्थानों का बड़ा हिस्सा निजी क्षेत्र में विकसित हुआ। वर्मा आयोग की रिपोर्ट के अनुसार लगभग 90 प्रतिशत पूर्व-सेवा शिक्षक-शिक्षा संस्थान गैर-सरकारी क्षेत्र में थे (EducationWorld, n.d.)। NCTE के पूर्व अध्यक्ष जे.एस. राजपूत ने 1994-99 के अपने अनुभव के आधार पर लिखा है कि उस दौर में अखबारों में बी.एड. डिग्री दिलाने के विज्ञापन नियमित छपते थे। परिषद ने ऐसे विज्ञापन संबंधित विश्वविद्यालयों के कुलाधिपतियों को भेजे, जिसके बाद 1999 का बिहार बी.एड. प्रकरण सामने आया (Rajput, 2021)। इन अभिलेखों से संकेत मिलता है कि वैधानिक नियमन की स्थापना के बाद भी मान्यता और वास्तविक शिक्षण के बीच दूरी बनी रही।

अवधि बढ़ाने की संस्थागत माँग

अवधि बढ़ाने की माँग शिक्षक-शिक्षा के भीतर से भी उठी रही। एक विश्वविद्यालय-पाठ्यक्रम के अनुसार NCTE ने 1998 के अपने पाठ्यचर्या ढाँचे में और फिर 2009 में दो वर्षीय बी.एड. की सिफारिश की थी (Mohanlal Sukhadia University, 2017)। राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद (NCERT) के क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान 1999 से दो वर्षीय बी.एड. चला रहे थे (Regional Institute of Education, Bhubaneswar, n.d.)। NCFTE 2009 का शीर्षक ही पेशेवर और मानवीय शिक्षक की तैयारी को उसके केंद्र में रखता है (NCTE, 2009)।

जस्टिस वर्मा आयोग

निर्णायक हस्तक्षेप न्यायालय से आया। संसदीय उत्तर के अनुसार महाराष्ट्र के 291 डी.एड. संस्थानों की मान्यता से जुड़ी विशेष अनुमति याचिकाओं में सर्वोच्च न्यायालय ने जस्टिस जे.एस. वर्मा की अध्यक्षता में आयोग गठित किया, जिसे देश की शिक्षक-शिक्षा व्यवस्था के विभिन्न पक्षों की जाँच करनी थी (Lok Sabha, 2011)। आयोग का गठन 13 मई 2011 को हुआ (EducationWorld, n.d.)। आयोग ने 29 अगस्त 2012 को रिपोर्ट सौंपी। उसकी मुख्य सिफारिशें पूर्व-सेवा शिक्षक-शिक्षा की गुणवत्ता, सेवाकालीन शिक्षा, शिक्षक-प्रदर्शन और लेखा-परीक्षण, तथा NCTE के नियामक कार्यों को सुदृढ़ करने से संबंधित थीं (Lok Sabha, 2013)। रिपोर्ट के सार के अनुसार आयोग ने NCFTE 2009 के अनुरूप कार्यक्रमों के पुनर्गठन, निरीक्षण के दिशानिर्देश, सतर्कता प्रकोष्ठ, शिक्षक-शिक्षा मूल्यांकन और प्रत्यायन केंद्र तथा NCTE अधिनियम की धारा 17 में संशोधन की सिफारिश की (Centre for Policy Research, n.d.)। इन सिफारिशों का केंद्र केवल अवधि नहीं था। उनका जोर निरीक्षण, सतर्कता और वास्तविक शिक्षण की जाँच पर था।

NCTE विनियम 2014

इन्हीं सिफारिशों के आधार पर NCTE ने 28 नवंबर 2014 को 15 कार्यक्रमों के लिए नए विनियम और मानदंड अधिसूचित किए (NCTE, n.d.-a), जो 1 दिसंबर 2014 को राजपत्र में प्रकाशित हुए (University of Kalyani, n.d.)। बी.एड. की अवधि दो वर्ष की गई और एकल संस्थानों के स्थान पर बहुविषयी या संयुक्त संस्थानों पर बल दिया गया। हर कार्यक्रम में सिद्धांत, प्रायोगिक कार्य (practicum) और इंटरशिप अनिवार्य घटक बने, और कार्यक्रम का कम-से-कम 25 प्रतिशत भाग विद्यालय-आधारित गतिविधियों तथा इंटरशिप को दिया गया। सूचना और संचार प्रौद्योगिकी (ICT), योग, जेंडर और समावेशी शिक्षा पाठ्यचर्या के अंग बने तथा हर पाँच वर्ष में प्रत्यायन अनिवार्य किया गया (NCTE, n.d.-a)। इन मानदंडों पर आधारित विश्वविद्यालयी पाठ्यक्रमों में प्रति वर्ष कम-से-कम 200 कार्य-दिवस, न्यूनतम 20 सप्ताह की विद्यालय-इंटरशिप (पहले वर्ष 4 और दूसरे वर्ष 16 सप्ताह), तथा पाठ्यक्रम-कार्य और प्रायोगिक कार्य में 80 प्रतिशत और इंटरशिप में 90 प्रतिशत न्यूनतम उपस्थिति दर्ज है (Sam Higginbottom University of Agriculture, Technology and Sciences [SHUATS], 2015)।

ये प्रावधान गुणवत्ता की स्पष्ट कसौटियाँ देते हैं। पर किसी प्रावधान का अधिसूचित होना उसके क्रियान्वयन का प्रमाण नहीं होता। यह प्रश्न 2015 के बाद के अभिलेखों से ही परखा जा सकता है।

2014 के बाद की नीतिगत दिशा

NEP 2020 ने मानकों पर खरे न उतरने वाले संस्थानों के विरुद्ध कठोर कार्रवाई और 2030 तक केवल शैक्षिक रूप से सुदृढ़, बहुविषयी और एकीकृत शिक्षक-शिक्षा कार्यक्रम चलाने का लक्ष्य रखा (Rajput, 2021)। अक्टूबर 2021 में चार वर्षीय एकीकृत शिक्षक-शिक्षा कार्यक्रम (ITEP) के मानदंड अधिसूचित हुए (NCTE, n.d.-b)। 2025 में NCTE ने चार वर्षीय स्नातक या स्नातकोत्तर उपाधि वालों के लिए एक वर्षीय बी.एड. लौटाने के मसौदा विनियम जारी किए (Careers360, 2025a)। शिक्षा-विशेषज्ञों ने इस प्रस्ताव को प्रशिक्षण को कमजोर करने वाला बताया (Careers360, 2025b)। मार्च 2026 में शिक्षा मंत्रालय ने लोकसभा को बताया कि बी.एड. की अवधि एक वर्ष करने का फ़िलहाल कोई प्रस्ताव नहीं है (Press Trust of India, 2026)। इस पूरी यात्रा में अवधि और मानदंड बार-बार बहस में आए, जबकि यह प्रश्न खुला रहा कि इन मानदंडों का पालन कक्षा और विद्यालय में किस सीमा तक होता है।

दो वर्षीय बी.एड. के बाद के साक्ष्य

2015 के बाद के अभिलेखों में तीन समस्याएँ बार-बार दिखाई देती हैं: उपस्थिति और विद्यालय-इंटरशिप का कागज़ी प्रबंधन, संकाय और निरीक्षण की कागज़ी पूर्ति, तथा ऐसे विद्यार्थी जो केवल परीक्षा के समय संस्थान पहुँचते हैं। तालिका 1 इन अभिलेखों को कालक्रम में रखती है और साथ में नाटक का वह प्रसंग भी दर्ज करती है जिसमें वही प्रवृत्ति कलात्मक रूप में आई है।

तालिका 1: दो वर्षीय बी.एड. के बाद के प्रमुख अभिलेख

वर्ष	स्रोत	प्रमुख तथ्य	नाटक में प्रतिबिंब
2018	Deccan Herald (2018)	शपथ-पत्र के माध्यम से ऑकड़ा-कोप बनाने की प्रक्रिया के बाद NCTE ने 11,638 संस्थानों की सूची जारी की; उस समय 21,676 संस्थान निजी और 1,543 राज्य सरकारों द्वारा	धनूलाल: "मान्यता का फ्रेम दीवार पर"

		संचालित थे	
2020	Mondal (2020)	दस अध्ययनों की समीक्षा: शिक्षक-प्रशिक्षक कार्यक्रम को प्रभावी मानते हैं, जबकि अधिकांश विद्यार्थी-शिक्षकों का दृष्टिकोण प्रतिकूल है	मुरारी की आरंभिक 'जुलम' वाली सोच
2021	Rajput (2021)	उत्तर प्रदेश में जुलाई 2020 में फर्जी डिग्री वाले 1,427 शिक्षक चिह्नित हुए, 927 हटाए गए और लगभग 900 करोड़ रुपये वेतन के रूप में निकाले गए; हिमाचल प्रदेश के एक निजी विश्वविद्यालय द्वारा 17 राज्यों में 36,000 डिग्रियाँ बेचे जाने की रिपोर्टें	डिग्री का प्रभाव अंततः कक्षा तक पहुँचता है
2023	Khan (2023), अज़ीम प्रेमजी विश्वविद्यालय के एक अध्ययन के हवाले से	कम-से-कम 70 प्रतिशत संस्थानों में औसत उपस्थिति 80 प्रतिशत से कम; 60 प्रतिशत से अधिक संस्थानों ने इंटरशिप पूरी न होने पर भी परीक्षा में बैठने दिया; एक साथ कई संस्थानों में दर्ज संकाय-सदस्यों का उल्लेख	त्रिपुरारी का संदेश: "अटेंडेंस अपडेटेड"
2024	Choudhury (2024)	पश्चिम बंगाल के 656 NCTE-मान्यताप्राप्त शिक्षक-प्रशिक्षण कॉलेजों में से 110 एक ही ज़िले में; वहाँ कई निजी कॉलेजों की कक्षाएँ खाली मिलीं; सरकारी संस्थानों के शिक्षकों के अनुसार एजेंटों के लिए विद्यार्थी केवल परीक्षा में आते हैं और उनकी उपस्थिति कॉलेज सँभालते हैं; संबद्ध विश्वविद्यालय की कुलपति ने योग्य शिक्षकों के अभाव और निरीक्षण की सीमाएँ स्वीकार कीं	धनूलाल-चुनूलाल के पैकेज और फेरी-गीत
2025-26	NCTE (2025); Gupta (2026)	प्रदर्शन-मूल्यांकन रिपोर्ट (PAR) न देने पर धारा 17 के तहत संस्थानों की मान्यता 2025-26 सत्र से वापस ली गई; अप्रैल 2026 में दिल्ली उच्च न्यायालय के निर्देशों के बाद	नियमन पहले कागज़ माँगता है

		PAR पोर्टल अंतिम अवसर के रूप में फिर खोला गया	
2026, सितंबर	India Legal (2026)	सर्वोच्च न्यायालय ने वार्षिक PAR माँगने के NCTE के अधिकार को वैध ठहराया और संस्थानों तथा नियामक को शिक्षा-अधिकार की संरचना में कर्तव्य-धारक कहा	स्कूल सुपरवाइज़र की कसौटी: प्रक्रिया बच्चे तक पहुँची या नहीं
2026, अक्टूबर	Shukla (2026)	तमिलनाडु में सूचना का अधिकार (RTI) से प्राप्त अभिलेखों के आधार पर एक गैर-सरकारी संगठन ने शिकायत की कि 29 मार्च 2023 को कम-से-कम 15 निरीक्षण-संयोजकों ने एक ही दिन में दो से पाँच कॉलेजों के प्रत्यक्ष निरीक्षण दर्ज किए; एक संयोजक के पाँच कॉलेज 500 किलोमीटर से अधिक दूरी में फैले थे; 37 संकाय-नाम 222 कॉलेज-प्रविष्टियों में मिले; 74 कॉलेजों की जाँच की माँग की गई	शेर: "मुहर ने पृष्ठा 'क्लास कहाँ?', रजिस्टर बोला 'हो गया।'"

इन अभिलेखों को साथ रखने पर तीन प्रक्रियाएँ उभरती हैं।

कागज़ी उत्पाद छोड़ने वाले घटक

पाठ-योजना, दत्त-कार्य, शिक्षण-अधिगम सामग्री (TLM), चिंतनशील डायरी और इंटरैक्टिव-प्रमाणपत्र सीखने की प्रक्रिया के प्रमाण के रूप में कागज़ी उत्पाद छोड़ते हैं। उपस्थिति के प्रबंधन और इंटरैक्टिव पूरी न होने पर भी परीक्षा की अनुमति से जुड़े विवरण बताते हैं कि जाँच का आधार प्रक्रिया के बजाय यही उत्पाद बन जाते हैं (Choudhury, 2024; Khan, 2023)। इसलिए पाठ्यचर्या के वही घटक, जो सबसे अधिक पेशेवर तैयारी की माँग करते हैं, सबसे सरलता से सुविधा-पैकेज में बदल सकते हैं।

नियमन का कागज़ी आधार

शपथ-पत्र, PAR, संकाय-सूची और निरीक्षण-रिपोर्ट नियमन के आवश्यक साधन हैं। तमिलनाडु और मुर्शिदाबाद से जुड़े विवरण दिखाते हैं कि इन्हीं साधनों की औपचारिक पूर्ति भी संभव है (Choudhury, 2024; Shukla, 2026)। सर्वोच्च न्यायालय द्वारा PAR की वैधता स्वीकार किए जाने से जवाबदेही का विधिक आधार मज़बूत हुआ है (India Legal, 2026)। फिर भी उपलब्ध साक्ष्य बताते हैं कि जब तक सत्यापन कक्षा, विद्यालय और बच्चे तक नहीं पहुँचता, मानदंडों का पालन अभिलेखों तक सीमित रह सकता है।

माँग-पक्ष का दबाव

दो वर्षीय कार्यक्रम के प्रति विद्यार्थी-शिक्षकों का प्रतिकूल दृष्टिकोण (Mondal, 2020) और एजेंटों के माध्यम से ऐसे विद्यार्थियों का प्रवेश जो कक्षा में नहीं आते (Choudhury, 2024), दोनों माँग-पक्ष की ओर संकेत करते हैं। प्रतियोगी परीक्षाओं की तैयारी करने वाले विद्यार्थी के लिए दो वर्ष की अवधि अवसर-लागत के रूप में दिखाई दे सकती है। अवधि बढ़ने और बिना उपस्थिति वाली डिग्री की माँग के बीच

संबंध की पुष्टि के लिए अलग अनुभवजन्य अध्ययन आवश्यक है; उपलब्ध साक्ष्य इस संबंध की केवल संभावना दिखाते हैं।

इन तीनों प्रक्रियाओं से स्पष्ट होता है कि समस्या को केवल निजी और सरकारी संस्थानों के भेद में नहीं समझा जा सकता। Mondal (2020) की समीक्षा में विद्यार्थी-शिक्षकों की प्रतिकूलता संस्थान के प्रकार से परे दिखाई दी, और नियामक जवाबदेही की आवश्यकता भी किसी एक प्रकार के संस्थान तक सीमित नहीं है। आगे का नाटक इन्हीं प्रवृत्तियों को दो मित्रों की कथा में रचता है। उसका केंद्रीय प्रश्न यह है कि सही ढंग से चलने वाला बी.एड. कार्यक्रम विद्यार्थी को वह क्या देता है जो कोई सुविधा-पैकेज नहीं दे सकता।

नाटक: चले मुरारी-त्रिपुरारी शिक्षक बनने

पात्र: कथा-मंडली (कथागायक 1 से 4; गीतों में ज़ोर वाली पंक्ति एक गायक एकल गाता है, शेष कोरस) · मुरारी · त्रिपुरारी · धनूलाल (एजेंट) · चुन्नुलाल (सहायक) · एडमिशन-सूचना कर्मी · मननिका मैम · प्रभेश सर · चिंतनशील सर · कॉलेज के शिक्षक-शिक्षिकाएँ और विद्यार्थी · कार्यालय सहायक · अटेंडेंस-प्रहरी · स्वप्न-पात्र (टीएलएम का भूत, प्लानिंग दरोगा, फॉर्मेटिव असेसमेंट मुंशी, पीयर ऑब्ज़र्वेशन का आईना, एक्शन रिसर्च जासूस) · स्कूल सुपरवाइज़र · कोचिंग गुरु · चयन अधिकारी · स्कूल के बच्चे

प्रस्तावना: लो, शुरू होती है एक कहानी

[ढपली की धीमी थापा। चार कथागायक चार दिशाओं से आते हैं— हाथों में अखबार, चाय, नोट्स और कैलेंडर।]

उद्घाटन गीत

एकल (कथागायक 1): लो, शुरू हुई अपनी कहानी,
कोरस: न राजा इसमें, न कोई रानी।
एकल (कथागायक 1): दो यार थे बिल्कुल पक्के, कमरा था किराये का,
कोरस: सपने बुनते संग-संग, जीवन था तैयारी का।

कोरस:

मुखर्जी नगर में डेरा डाला,
नोट्स, चाय, तारीखों का जाला।
सुबह कोचिंग, शाम रिविज़न,
रात मॉक टेस्ट ने घर सँभाला।

एकल (कथागायक 1): एक था मुरारी, दूजा त्रिपुरारी,
कोरस: जेब थी हल्की, उम्मीद थी भारी।
एकल (कथागायक 1): एक सुबह अखबार ने करवट बदली,
कोरस: वहीं से मुड़ी कहानी हमारी।
एकल (कथागायक 1): चले मुरारी-त्रिपुरारी शिक्षक बनने,
कोरस: डिग्री के संग अपने भ्रम भी चुनने!

दृश्य 1: भर्ती की खबर, शिक्षक का आसान गणित और झुमरी तलैया मॉडल

[मुरारी किताब पर मिर रखकर सो रहा है। त्रिपुरारी अखबार लहराते हुए दौड़ता आता है।]

त्रिपुरारी: मुरारी! उठ! सरकारी भविष्य ने दरवाज़ा खटखटाया है!

मुरारी: (आँख बंद किए) कह दे, किराया अगले महीने देंगे।

त्रिपुरारी: किराया नहीं, वैकेंसी! स्टेट टीचर सिलेक्शन बोर्ड पाँच हज़ार टीचर की भर्ती निकालने वाला है।

मुरारी: (उछलकर) पाँच हज़ार? उनमें दो पोस्ट पर हमारे नाम की नेमप्लेट भी लगी है क्या?

त्रिपुरारी: नेमप्लेट बाद में लगेगी। पहले एलिजिबिलिटी देखा। ग्रेजुएशन है, सब्जेक्ट है, एग्जाम की तैयारी है। बीच में बस बी.एड. चाहिए।

मुरारी: "बस बी.एड." ऐसे बोल रहा है जैसे चाय में दो बिस्कुट और डालने हों। दो साल का कोर्स है!

त्रिपुरारी: डिग्री अरेंज हो जाएगी। और टीचर की जॉब में करना ही क्या है?

मुरारी: सिलेबस फिक्स, टाइम-टेबल फिक्स, छुट्टियाँ फिक्स। एक बार नोट्स बना लो, फिर हर साल बस तारीख बदलकर पढ़ाओ।

त्रिपुरारी: रिज़ल्ट अच्छा आए तो टीचर का कमाल; कम आए तो स्टूडेंट ने मेहनत नहीं की। सिस्टम हर हाल में बेकसूर।

मुरारी: क्लास में हम बोलेंगे, बच्चे सुनेंगे। जो बीच में "क्यों" पूछे, उससे कह देंगे — "पहले चैप्टर तो पूरा होने दो।"

त्रिपुरारी: एक होशियार बच्चा पढ़ेगा, बाकी उँगली रखकर साथ चलेंगे। सहभागिता भी हो गई, गला भी बच गया।

मुरारी: क्लास चुप, मतलब डिसिप्लिन बढ़िया। सबकी कॉपी में एक ही जवाब, मतलब पढ़ाई पूरी।

त्रिपुरारी: जहाँ सही, वहाँ टिक; जहाँ गलत, वहाँ गोला। ज्ञान भी स्थिर।

मुरारी: टीचर भी स्थिर।

[दोनों कुर्सियों पर अकड़कर बैठते हैं।]

कथागायक 1 — शेर:

पेशा अभी अनजान था, राय मगर दमदार,
आधी समझ की गठरी पर पूरा था ऐतबार।

मुरारी: लेकिन बी.एड. में दो साल लग गए तो मेरी यूपीएससी की तैयारी का क्या होगा? इस बार मेन एग्जाम दस नंबर से रह गया।

त्रिपुरारी: तैयारी चलती रहेगी, डिग्री भी ले लेंगे। नौकरी की फाइल में एक भी डॉक्यूमेंट कम नहीं होना चाहिए।

मुरारी: वैसे भी लेसन प्लान, जर्नल और पेडागॉजी वाले सवाल यूपीएससी में थोड़े ही आते हैं।

त्रिपुरारी: टीचर भर्ती में भी जनरल स्टडीज़ और सब्जेक्ट ही आएगा। पहले कुर्सी तक पहुँचो; कुर्सी पर क्या करना है, बाद में सीख लेंगे।

कथागायक 2 — शेर:

भर्ती का पर्चा पूछे उत्तर, पेशा माँगे हुनर,
कुर्सी मिलना एक पड़ाव है, क्लास अलग सफ़र।

त्रिपुरारी: (कंधे उचकाकर) वह सफ़र नौकरी लगने के बाद देखेंगे। मेरे एजेंट ने बताया है, दो एडमिशन साथ कराओ तो फ्रेंडशिप डिस्काउंट मिलेगा।

मुरारी: ख़ामखा पैसा क्यों बहाएँ? हमारे झुमरी तलैया में भी सरकारी बी.एड. कॉलेज है। वहाँ टीचर के दर्शन अमावस के चाँद जैसे होते हैं — कैलेंडर में तय, आँखों से ग़ायब।

त्रिपुरारी: फिर असाइनमेंट, लेसन प्लान और जर्नल कौन बनाता है?

मुरारी: (गर्व से) कॉलेज के बगल में दुकान है — "तैयार बी.एड. सामग्री भंडार।" असाइनमेंट विषय के हिसाब से, लेसन प्लान कक्षा के हिसाब से, टीएलएम पीस के हिसाब से और जर्नल भावनाओं समेत।

[कथागायक 3 दुकानवाला और कथागायक 4 कॉलेज बाबू बनता है।]

झुमरी दुकानवाला: आइए! ताज़ा लेसन प्लान! पिछले बैच का अनुभव, इस बैच की तारीख! जर्नल में पछतावा चाहिए या प्रेरणा? दोनों फ्लेवर मौजूद!

ग्राहक-विद्यार्थी: एक टीएलएम दीजिए — देखने में भारी, उठाने में हल्का।

झुमरी दुकानवाला: यह लीजिए। बच्चा इस्तेमाल करे न करे, बाहर वाला परीक्षक ज़रूर देखेगा।

झुमरी कॉलेज बाबू: (फाइल खोले बिना) बहुत मौलिक! मुहर लगाओ। अगला!

[बाबू फाइल पीछे से दुकानवाले को लौटा देता है; दुकानवाला उस पर नया कवर चढ़ाता है।]

झुमरी दुकानवाला: रीसाइक्लिंग पूरी! अब यह अगले बैच के लिए "नवीन शिक्षण-अभ्यास" है।

त्रिपुरारी: (ताली बजाकर) यह तो सर्कुलर इकोनॉमी है!

मुरारी: बिल्कुल। पर्यावरण-प्रेमी शिक्षक-शिक्षा — ज्ञान भले कम बने, कागज़ बर्बाद न हो।

कथागायक 3 — शेर:

दुकान से फाइल चली, कॉलेज में मुहर लगवाई,
ज्ञान वहीं का वहीं रहा, तारीख नई लग आई।

त्रिपुरारी: फिर भी प्राइवेट पैकेज में गारंटी है। चल, एजेंट से बात करते हैं।

दूर की आवाज़: ले लो... ले लो... बी.एड. की डिग्री ले लो!

दृश्य 2: बी.एड. का बाज़ार और दो अलग रास्ते

[डोल और सीटी। धनूलाल और चुनूलाल चमकीले बोर्ड लेकर आते हैं; बाज़ार-मंडली तैयार फाइलें और खाली फोटो-फ्रेम लिए पीछे-पीछे।]

फेरी-गीत: डिग्री ले लो

एकल (धनूलाल): ले लो, ले लो, बी.एड. ले लो,

कोरस (बाज़ार-मंडली): धनूलाल कॉलेज से ले लो!

एकल (धनूलाल): आने-जाने का झंझट छोड़ो,

कोरस: डिग्री को घर की राह पे मोड़ो।

एकल (धनूलाल): आप बस पूछो, "कब तक होगा?"

कोरस: हम मुस्काएँ, "जल्द, सरकार!"

एकल (धनूलाल): फ़िक्र को रख दो बैग के भीतर,

कोरस: आराम करो दो साल लगातार।

एकल (धनूलाल): जितना ऊपर पैकेज जाएगा,

कोरस: उतना हल्का उम्मीदवार!

धनूलाल: (मेन्यू-कार्ड खोलकर) बेसिक पैकेज — एडमिशन, आईडी कार्ड और भरोसे की पहली खुराक।

चुनूलाल: सिल्वर पैकेज — प्रेजेन्स सपोर्ट और असाइनमेंट असिस्टेंस।

धनूलाल: गोल्ड पैकेज — यूनिट प्लान, लेसन प्लान और आपके हिस्से का रिफ्लेक्शन भी।

चुनूलाल: डायमंड पैकेज — स्कूल एक्सपीरियंस, ग्रुप फोटो और अनुभवों होने का प्रीमियम एहसास।

मुरारी: "अनुभव" कौन होगा?

चुनूलाल: सर्टिफिकेट, जनाब! स्टूडेंट को अनुभव देकर इतना परेशान क्यों करना?

त्रिपुरारी: कॉलेज और डिग्री वैलिड तो हैं?

धनूलाल: मान्यता का फ्रेम दीवार पर, मुहर फाइल पर और भरोसा हमारे चेहरे पर। तीन लेयर की सुरक्षा।

मुरारी: रेगुलर क्लास?

धनूलाल: (गंभीर व्यापारिक स्वर में) हम किसी को क्लास से रोकते नहीं। बस आने की ज़रूरत महसूस नहीं होने देते।

चुनूलाल: अटेंडेंस को हमने जगह की बंदिश से आज़ाद कर दिया है। मॉडर्न सोच है!

कथागायक 3 — शेर:

मानक दीवारों पर रहे, व्यवहार पीछे सो गया,
मुहर ने पूछा "क्लास कहाँ?", रजिस्टर बोला "हो गया।"

त्रिपुरारी: दोनों एडमिशन साथ कराएँ तो कुछ डिस्काउंट?

धनूलाल: "डबल एडमिशन, सिंगल टेंशन" ऑफ़र! शर्तें इतनी छोटी लिखी हैं कि पढ़ते-पढ़ते कोर्स पूरा हो जाएगा।

मुरारी: कुल खर्च?

चुभूलाल: शुरुआत में दो लाख के आसपास। "शुरुआत" शब्द को प्यार से सुनिए – आगे रिश्ता गहरा होगा।

जिंगल: बेलनेस पॉलिसी

एकल (चुभूलाल): ट्रैफिक से राहत, क्लास से दूरी,
कोरस: नींद रहे भरपूर!

एकल (चुभूलाल): फीस समय पर आती रहना,
कोरस: बाकी सब मंजूर!

[दूसरी ओर एडमिशन-सूचना कर्मी सादा बोर्ड लगाता है: "एंट्रेंस टेस्ट, मेरिट, यूनिवर्सिटी एलॉटमेंट और स्पॉट राउंड – सरकार अनुदानित शिक्षा महाविद्यालय, श्मशान घाट के पास।" कोई प्रचार-संगीत नहीं।]

धनूलाल: भाई साहब, कोई ऑफर? कोई बैनर? "आज एडमिशन, कल भविष्य" जैसा कुछ?

एडमिशन-सूचना कर्मी: एंट्रेंस टेस्ट, मेरिट और एलॉटमेंट। सीट बची तो स्पॉट राउंड। डिग्री तभी, जब बी.एड. की पूरी पढ़ाई और सारे तय काम पूरे हों।

चुभूलाल: आराम की गारंटी?

एडमिशन-सूचना कर्मी: नहीं। सीखने का मौका है; उसका इस्तेमाल आपको करना होगा।

धनूलाल: यह काउंटर कम, चेतावनी केंद्र ज्यादा है!

मुरारी: (बोर्ड पढ़कर) एक मिनट... कॉलेज श्मशान घाट के पास है?

एडमिशन-सूचना कर्मी: जी। पता यही है।

मुरारी: लोकेशन भी ईमानदार है! मेरी बी.एड. वाली पुरानी धारणाओं का अंतिम संस्कार पास में ही हो जाएगा।

एडमिशन-सूचना कर्मी: (हल्की मुस्कान) कॉलेज धारणाएँ उठाकर नहीं फेंकता, उन पर सवाल ज़रूर उठवाता है। आखिरी काम आपको ही करना होगा।

त्रिपुरारी: मुरारी, मेरिट लिस्ट में नाम तो दोनों का है, पर मैं पैकेज वाला कॉलेज ले रहा हूँ। पैसा जाएगा, पर टाइम बचेगा। मुझे नौकरी के एंजाम की तैयारी करनी है, नौकरी की क्वालिफिकेशन की पढ़ाई नहीं।

मुरारी: और मैं सरकार अनुदानित शिक्षा महाविद्यालय वाला। फीस कम। झुमरी मॉडल का अनुभव साथ है – सरकारी जगह पर कौन रोज़ इतना काम करवाता होगा?

त्रिपुरारी: कहीं तेरी "सरकारी शांति" ने दिल्ली आते ही नौकरी जॉइन कर ली हो तो?

मुरारी: बीच-बीच में चेहरा दिखा आऊंगा, दो साल निकल जाएँगे, डिग्री मिल जाएगी। ना हींग लगे, ना फिटकरी, रंग भी चोखा! तेरा आराम कैसे से आएगा, मेरा मुफ्त में – और बचे पैसों से नौकरी लगते ही फॉरेन टूर।

संक्रमण-गीत: रास्ते अलग, भ्रम एक

एकल (कथागायक 1): रास्ते अलग, पर सोच थी एक,
कोरस: डिग्री पहले, सीख पर ब्रेक!

एकल (कथागायक 1): एक ने दाम से सुविधा पाई,
कोरस: एक ने सरकारी छूट लगाई।

एकल (कथागायक 1): दोनों को डिग्री साफ़ दिखी थी,
कोरस: शिक्षक की सूरत धुंधली थी!

[त्रिपुरारी बाज़ार की ओर, मुरारी महाविद्यालय की ओर जाता है।]

दृश्य 3: "आज चेहरा दिखा आएँ" – मुरारी का पहला असली कॉलेज-दिन

समय-गीत

एकल (कथागायक 2): पहला दिन बोला, "थकान उतारो,"
कोरस: दूजा बोला, "कमरा सँवारो।"

एकल (कथागायक 2): तीजे दिन लाइब्रेरी का बहाना,
कोरस: चौथे दिन भी मुश्किल था जाना।

एकल (कथागायक 2): पाँचवें दिन समझ यह आई –
कोरस: "चेहरा दिखा दें, बहुत पढ़ाई!"

एकल (कथागायक 2): कंधी करके निकला मुरारी,
कोरस: जैसे कॉलेज हो रिश्तेदारी!

[घड़ी नौ बजाती है। दिशा-बोर्ड पर दो तीर: "श्मशान घाट" और "सरकार अनुदानित शिक्षा महाविद्यालय"। विद्यार्थी असेंबली हॉल की ओर दौड़ रहे हैं; मुरारी बाल सँवारते हुए धीरे-धीरे आता है।]

मुरारी: रास्ते का बोर्ड भी कमाल है। एक तरफ़ ज़िंदगी का आखिरी पड़ाव, दूसरी तरफ़ मेरी छुट्टियों का आरामगाह।

स्टूडेंट 1: मुरारी जी, जल्दी आइए। मॉर्निंग असेंबली शुरू हो रही है।

मुरारी: अभी तो नौ बजे हैं।

स्टूडेंट 1: इसीलिए। यहाँ नौ बजे का मतलब नौ ही है, पौने दस नहीं।

मुरारी: सरकारी कॉलेज में समय की इतनी ईमानदारी कब से आ गई?

सभा-संचालक: आज का सवाल है: "क्या टीचर बिना सुने अच्छी क्लास ले सकता है?" पहले अपने साथी से दो मिनट बात कीजिए, फिर आरिफ अपनी बात रखेंगे।

मुरारी: सुबह-सुबह सवाल? कोई मोटिवेशनल कोट बोलकर सीधे आगे नहीं बढ़ सकते?

स्टूडेंट 2: यहाँ विचार सुनकर भूलते नहीं, उस पर बात भी करते हैं।

[घंटी।]

कॉलेज शिक्षक 1: अपने स्कूल के दिनों के किसी अनुभव पर आपस में बात करके तीन अच्छे सवाल बनाइए।

मुरारी: सर, सवाल भी हम बनाएँगे? फिर जवाब कौन देगा?

कॉलेज शिक्षक 1: तैयार जवाब से पहले अच्छा सवाल ज़रूरी है। जवाब मिलकर हूँगे।

[घंटी।]

कॉलेज शिक्षिका 2: कल पाँच मिनट का ग्रुप माइक्रो-प्रेजेंटेशन होगा। हर ग्रुप अपने तर्क के साथ असहमति भी दर्ज करेगा।

मुरारी: मैम, सिर्फ़ हाज़िरी से प्रेजेन्स नहीं लग सकती?

कॉलेज शिक्षिका 2: चेहरा प्रेजेन्स है, भागीदारी सीख है।

[मननिका मैम आती हैं।]

मननिका मैम: इस सेमेस्टर से हर विद्यार्थी रिफ्लेक्टिव जर्नल लिखेगा – सिर्फ़ घटनाएँ नहीं, अपने सवाल, उलझनें और आगे की संभावना भी।

मुरारी: महीने के आखिर में एक साथ लिख दें? मेमोरी पर पूरा भरौसा है।

मननिका मैम: जर्नल बिजली का बिल नहीं कि आखिरी तारीख़ को भर दिया। घटना याद रह जाती है, उस वक़्त की उलझन नहीं।

[प्रवेश सर आते हैं।]

प्रवेश सर: कल के लिए एक छोटा-सा असाइनमेंट। बस दो सवाल।

मुरारी: आखिर किसी टीचर ने तो स्टूडेंट का हाल समझा!

प्रवेश सर: पहला: अपनी किसी क्लास का एक अनुभव लिखिए – उसका सामाजिक संदर्भ क्या था, कौन-कौन शामिल थे, ऐसा क्यों हुआ, असर क्या रहा और टीचर के पास क्या-क्या विकल्प थे।

मुरारी: और दूसरा?

प्रवेश सर: पहले जवाब को किसी शैक्षिक कॉन्सेप्ट से जोड़िए और देखिए कि वह कहाँ तक साथ देता है।

मुरारी: सर, सवाल दो हैं या पूरा परिवार आधार कार्ड समेत आया है?

प्रश्नेश सर: गिनती छोटी है। सोच कितनी बड़ी होगी, यह आप तय करेंगे।

[कार्यालय सहायक सूचना-पत्र लेकर आता है।]

कार्यालय सहायक: मुरारी जी?

मुरारी: जी। स्कॉलरशिप हो तो नाम सही है।

कार्यालय सहायक: शो-कॉज़ नोटिस। लगातार एब्सेंट रहने की वजह लिखिए। आगे से रेगुलर रहिए, बरना ऑफिशियल सूचना आपके घर के पते पर भी भेजी जा सकती है।

मुरारी: घर के पते पर? घरवाले समझते हैं मैं दिल्ली में पढ़ रहा हूँ। सच भेजकर रिश्तों में तनाव क्यों डालना चाहते हैं?

[अटेंडेंस-प्रहरी बड़ा रजिस्टर लेकर आता है।]

अटेंडेंस-प्रहरी: नाम?

मुरारी: मुरारी। मन से पूरे हफ़ते हाज़िर था।

अटेंडेंस-प्रहरी: रजिस्टर में मन का कॉलम नहीं है। क्लास, एक्टिविटी और स्कूल एक्सपीरियंस में शरीर समेत आइए।

मुरारी: एंड-टर्म एग्जाम देकर हिसाब बराबर नहीं हो सकता?

कॉलेज शिक्षक 1: एग्जाम अपनी जगह है। यहाँ सीखने की जाँच पूरे साल चलती है – काम जमा होगा, फीडबैक मिलेगा, फिर सुधारा।

मुरारी: मतलब गलती करने के मौके पूरे साल?

कॉलेज शिक्षक 1: और समय रहते सुधारने के भी।

स्टूडेंट 3: यहाँ ड्राफ्ट दूसरी ज़िंदगी लेकर लौटता है।

[दो विद्यार्थी मुरारी को स्टूडेंट एक्टिविटी की तैयारी में खींच ले जाते हैं।]

मुरारी: नोटिस का दुख तो मना लेने दो!

स्टूडेंट 2: दुख को प्रोग्राम की थीम में एडजस्ट कर देंगे।

व्यंग्य-गीत: उम्मीद क्या थी, मिला क्या

एकल (मुरारी): चेहरा दिखाने आया था मैं,

कोरस: नोटिस ने नाम पुकारा!

एकल (मुरारी): आराम समझा था जिस दर को,

कोरस: निकला सीख का अखाड़ा!

एकल (मुरारी): सोचा था कुर्सी, मिली असेंबली,

कोरस: सोचा था छुट्टी, मिला "कारण बताओ"!

कोरस:

असेंबली, फिर क्लास है पहली, पहली के बाद दूजी है,

दूजी जाए, तीसरी आए, हर घंटी नई झूठी है!

फीडबैक आया, फिर से लिखो,

भाई, पुराना मत चिपकाओ!

एकल (मुरारी): जेब बची, पर नींद गई है, माथे चढ़ा सवाल,

कोरस: पहले हफ़ते टूट गया है छुट्टी वाला ख़याल!

[मुरारी फाइल, नोटिस और चार्ट सँभालते हुए निकलता है।]

दृश्य 4: एक की ऐश और दूसरे का हाल

[मुखर्जी नगर का कमरा। त्रिपुरारी आराम से मॉक टेस्ट लगा रहा है।

मुरारी बिखरे बाल, भारी बैग और उँगली पर गोंद लिए आता है।]

त्रिपुरारी: स्वागत है, सस्ते एडमिशन के महँगे यात्री!

मुरारी: चाय बना। आज बैग मुझसे ज़्यादा पढ़ा-लिखा लग रहा है।

त्रिपुरारी: मेरे आज दो सौ क्वेश्चन हुए। तेरी प्रोग्रेस?

मुरारी: एक शो-कॉज़, दो नए ड्राफ्ट और तीन बार "फिर से कीजिए।" आज एक सवाल बनाया था; फिर उस सवाल ने मुझे ही हल कर दिया।

[त्रिपुरारी का मोबाइल बजता है।]

त्रिपुरारी: देख! कॉलेज से मैसेज – "अटेंडेंस अपडेटेड। प्रोग्रेस शानदार।"

त्रिपुरारी – शेर:

रहता हूँ मुखर्जी नगर, हाज़िरी कॉलेज जाए,

मैं मॉक टेस्ट करता रहूँ, मेरी प्रोग्रेस बढ़ती जाए।

मुरारी: तू कॉलेज गया कब?

त्रिपुरारी: प्रोग्रेस को मेरे जाने की ज़रूरत नहीं। इधर पेमेंट जाता है, उधर लेसन प्लान जमा हो जाता है। इधर अगली फीस, उधर टीएलएम तैयार।

मुरारी: और रिफ्लेक्टिव जर्नल?

त्रिपुरारी: वह मेरे बिना बहुत गहराई से चिंतन कर रहा है।

मुरारी: स्कूल एक्सपीरियंस?

त्रिपुरारी: "स्कूल के सामने ग्रुप फोटो" की तारीख़ आनी बाकी है। अनुभव सर्टिफिकेट में अपने-आप जुड़ जाएगा।

मुरारी: मुझे लग रहा है मैंने फीस नहीं बचाई, अपनी शामें बेच दीं।

त्रिपुरारी: मैंने पहले ही कहा था। डिग्री तो दोनों को एक-सी मिलेगी, पर भर्ती परीक्षा तक मैं सारे नोट्स पढ़ चुका होऊँगा और तू चार्ट से सूरज की किरणें काट रहा होगा।

मुरारी: शायद तेरा रास्ता ही सही था।

मुरारी – शेर:

जेब को बचाया था, नींद गई उधार,

सस्ता समझा रास्ता, मिला काम का पहाड़।

त्रिपुरारी: शेर अच्छा है। अब इसी भाव से रिफ्लेक्टिव जर्नल भर देना – "आज दोस्त की बात न मानने का नतीजा समझ आया।"

[त्रिपुरारी मॉक टेस्ट में लग जाता है। मुरारी कैंची, चार्ट और जर्नल फैलाकर बैठता है।]

रात का ताल-गीत

एकल (कथागायक 3): ग्यारह बजे उद्देश्य लिखा,

कोरस: बारह बजे पूर्वज्ञान!

एकल (कथागायक 3): एक बजे गतिविधि अटकी,

कोरस: दो बजे सोया विद्वान!

कोरस: चार्ट इधर, जर्नल उधर, गोंद लगी ललाट,

काम करते-करते मुरारी सोया आधी रात।

[मुरारी मेज़ पर सो जाता है।]

दृश्य 5: कामों की रात और स्वप्न-अदालत

[नीली रोशनी, हल्की घंटी। स्वप्न-मुरारी उठता है।]

मुरारी: कॉलेज श्मशान घाट के पास क्या हुआ, मेरे असाइनमेंटों ने भी आधी रात को आत्माएँ भेज दीं!

स्वप्न-प्रवेश 1: टीएलएम का भूत

[टेडे चार्ट, डिब्बों और रंगीन कार्डों से बना भूत आता है।]

टीएलएम भूत: घबराओ मत। हम श्मशान से नहीं आए; तुम्हारे अधूरे कामों और मरी हुई जिज्ञासा से निकले हैं।

मुरारी: फिर भी एंट्री ऐसी है कि अटेंडेंस के बिना ही प्राण हाज़िर हो जाएँ।

टीएलएम भूत: पाँच घंटे लगाकर तुमने मुझे बनाया। अब बताओ – क्लास में बच्चा मेरे साथ करेगा क्या?

मुरारी: देखेगा।

टीएलएम भूत: फिर?

मुरारी: ध्यान से देखेगा।

टीएलएम भूत: फिर?

मुरारी: मेरी मेहनत की तारीफ करेगा।

टीएलएम भूत: तो मैं सीखने का साधन हूँ या तुम्हारी आर्ट-प्रदर्शनी? तुमने मुझे दीवार की नौकरी दे दी है; विरोध दर्ज कराने आया हूँ।

मुरारी: चार्ट हो। टैगो ने नहीं तो क्या चुनाव लड़ोगे?

[भूत ताली बजाता है; दो बच्चे क्रम-कार्ड लेकर आते हैं।]

टीएलएम का गीत

एकल (टीएलएम भूत): हाथ में आऊँ, खेल बनूँ,

कोरस (बच्चे): जोड़ूँ, टूटूँ, मेल बनूँ।

एकल (टीएलएम भूत): बच्चा बोले, तर्क लगाए,

कोरस: तभी तो टीएलएम कहाँ!

एकल (टीएलएम भूत): देखने भर से ज्ञान न आए,

कोरस: करके बच्चा अर्थ बनाए!

बच्चा 1: सर, हमें सिर्फ दिखाइए मत, करने दीजिए।

बच्चा 2: गलती भी करने दीजिए। हर बार पहले ही जवाब बता देंगे तो हम सीखेंगे कब?

टीएलएम भूत: सुंदर बनाओ, पर काम का भी। कम लागत चलेगी, कम सोच नहीं।

मुरारी: तुम भूत कम, वर्कशॉप वाले सर ज्यादा लगते हो।

टीएलएम भूत: दिन में बात नहीं सुनी, इसलिए नाइट शिफ्ट में आया हूँ।

स्वप्न-प्रवेश 2: दाढ़ी वाली रिफ्लेक्टिव जर्नल

[लंबी नकली दाढ़ी और जर्नल लिए मननिका मैम का स्वप्न-रूप आता है।]

जर्नल का स्वप्न-रूप: मुरारी... आज क्या सीखा?

मुरारी: आप कौन हैं? चुड़ैल तो लग रही हैं, पर दाढ़ी से मामला कन्फ्यूज़िंग है।

जर्नल का स्वप्न-रूप: अच्छा है। कम-से-कम अब ध्यान पूरा है।

मुरारी: रोज जर्नल में क्या लिखूँ? "स्कूल गया, पाठ पढ़ाया, बच्चे खुश हुए"?

जर्नल का स्वप्न-रूप: वह चिंतन नहीं, हाज़िरी का साहित्यिक रूप है। लिखो — किसी की आवाज़ छूट गई? कहाँ जवाब जल्दी बता दिया? किस सवाल से बच निकले? अगली बार क्या बदलोगे?

मुरारी: अपनी गलती लिख दी तो कोई पढ़ लेगा।

जर्नल का स्वप्न-रूप: गलती छिपाओगे तो वही तुम्हारी स्थायी टीचर बन जाएगी।

जर्नल का गीत

एकल (जर्नल): आईना हूँ, इज़ाम नहीं,

कोरस: रुकना मेरा काम नहीं।

एकल (जर्नल): आज की उलझन लिखते जाओ,

कोरस: कल की राह को साफ बनाओ।

एकल (जर्नल): मन की वाह-वाह छोड़ ज़रा,

कोरस: अपना फ़ैसला पढ़ ज़रा।

एकल (जर्नल): सच से आँख मिलाए जो,

कोरस: वही बदलना सीख सके!

मुरारी: यह आवाज़... मननिका मैम? स्वप्न-रूप तो समझ आया, मगर यह दाढ़ी?

मननिका मैम: तुम जर्नल को इतने हल्के में ले रहे थे कि सीधी-सादी एंट्री से काम नहीं चलता। डराकर जगाने के लिए उधार ली है।

[चिंतनशील सर अपनी ठुड़ी टटोलते हुए आते हैं।]

चिंतनशील सर: मेरी दाढ़ी किसी ने देखी? किताब पढ़ते-पढ़ते आँख लग गई, उठा तो चेहरा अधूरा लगा। मननिका जी! आप मेरी दाढ़ी क्यों ले आईं?

मननिका मैम: मुरारी को जगाने के लिए। आपको भी कभी-कभी इसकी ज़रूरत पड़ती है; आज मुझे पड़ गई।

चिंतनशील सर: अब समझ आया कि मैं दाढ़ी क्यों रखता हूँ!

मुरारी: सर, क्या दाढ़ी से चिंतन बढ़ता है?

चिंतनशील सर: नहीं। दाढ़ी से सिर्फ चेहरा बदलता है, चिंतन से नज़रिया।

[मननिका मैम दाढ़ी लौटाकर मुस्कराती हुई जाती हैं।]

चिंतनशील सर: तुम्हें किताब दी थी। पढ़ी?

मुरारी: पढ़ ली।

चिंतनशील सर: सोचा?

मुरारी: जानकारी नोट कर ली।

चिंतनशील सर: पढ़ना जानकारी की बोरी ढोना नहीं है। लेखक से कहाँ सहमत हुए, कहाँ सवाल उठा, किस अनुभव से बात जुड़ी — यह भी देखो।

चिंतनशील सर — शेर:

किताब पढ़ी तो बात मिली, सोचा तो मतलब आया, जानकारी सिर पर रख ली तो बस बोझ बढ़ाया।

मुरारी: सर, सपना मेरा है और असाइनमेंट आप दे रहे हैं?

चिंतनशील सर: चिंतन छुट्टी पर नहीं जाता।

स्वप्न-प्रवेश 3: यूनिट और लेसन प्लान दरोगा

[सीटी। दरोगा बड़ा नक्शा और "उद्देश्य", "गतिविधि", "आकलन" की तीन तख्तियाँ लिए आता है; तीन सहायक तीन दिशाओं में भाग रहे हैं।]

प्लानिंग दरोगा: रुकिए! शैक्षिक जाँच!

मुरारी: अब कौन-सा अपराध हो गया?

प्लानिंग दरोगा: उद्देश्य पूराब में, गतिविधि पश्चिम में और आकलन लापता। यह लेसन प्लान है या बिछड़ा हुआ परिवार?

मुरारी: मैंने फॉर्म के सारे खाने भर दिए हैं।

प्लानिंग दरोगा: खाने भरना प्लानिंग नहीं है। यह बड़ा नक्शा यूनिट प्लान है — पूरी यात्रा का नक्शा। लेसन प्लान आज के पड़ाव की तैयारी है।

मुरारी: तो क्लास बिल्कुल इसी नक्शे पर चलेगी?

प्लानिंग दरोगा: बच्चे ट्रेन नहीं और तुम स्टेशन मास्टर नहीं। सवाल आए तो रास्ता बदल सकता है। बिना योजना के टीचर भटकता है; योजना से चिपककर बच्चा भटकता है।

प्लानिंग दरोगा — शेर:

नक्शा राह बताता है, कदमों को बाँधता नहीं, प्लान वही जो क्लास सुने, सिर्फ खाने भरता नहीं।

मुरारी: अब गिरफ़्तार करेंगे?

प्लानिंग दरोगा: नहीं। "सुधार कर फिर जमा करें" की ज़मानत पर छोड़ता हूँ।

[मोहर। ढोल की तीन थाप।]

स्वप्न-प्रवेश 4: फॉर्मेटिव असेसमेंट मुंशी और कामों का जुलूस

शॉर्ट असाइनमेंट: मैं छोटा हूँ।

मुरारी: नाम से। तुम्हारे दो सवालों में पूरा मोहल्ला बसता है।

गुप बर्क: मैं सहयोग लाया हूँ।

मुरारी: कभी-कभी एक काम करता है, चार लोग नाम का सहयोग देते हैं।

प्रेजेंटेशन: मैं बोलने का कॉन्फिडेंस बढ़ाती हूँ।

मुरारी: और आखिरी रात बेचैनी भी।

फॉर्मेटिव असेसमेंट मुंशी: (बही लेकर) ऑर्डर! सब अपनी डेडलाइन बताओ।

तीनों एक साथ: कल!

मुरारी: तुम सबको एक ही हफ्ता क्यों पसंद है?

शॉर्ट असाइनमेंट: डेडलाइन इंसान बनाता है।

गुप बर्क: और इंसान को सारी डेडलाइन एक साथ याद आती हैं।

प्रेजेंटेशन: फिर उसे "होलिस्टिक डेवलपमेंट" कह दिया जाता है।

असेसमेंट का गीत

एकल (मुंशी): अंत में नंबर देना आसान,

कोरस: रास्ते में देना पहचान।

एकल (मुंशी): फीडबैक मिले, सुधार भी हो,

कोरस: तभी असेसमेंट मेहरबान!

एकल (मुंशी): अटकन दिखे तो वक्त भी दो,

कोरस: फिर से करने का हक भी दो।

मुरारी: तो सबका हमला एक ही हफ्ते नहीं होना चाहिए?

फॉर्मेटिव असेसमेंट मुंशी: सवाल ठीक है। बिना तालमेल, बिना समय और बिना काम के फीडबैक के, अभ्यास भी बोझ बन जाता है। ट्रेनिंग में तालमेल चाहिए, धावा नहीं।

मुरारी: तो रगड़ाई और घिसाई में फर्क क्या है?

फॉर्मेटिव असेसमेंट मुंशी: रगड़ाई वह जो धार बनाए; घिसाई वह जो सिर्फ थकाए। और अगर नंबर लिखकर फाइल बंद कर दी, तो मैं निर्माणात्मक नहीं, समाप्तात्मक मुहर बन जाता हूँ।

स्वप्न-प्रवेश 5: पीयर ऑब्जर्वेशन का आईना

पीयर आईना: मेरी तरफ देखो।

मुरारी: बाल सुबह सँवार लूँगा।

पीयर आईना: मैं पीयर ऑब्जर्वेशन हूँ। साथी की गलतियाँ गिनने नहीं, उसकी क्लास से सीखने आता हूँ।

मुरारी: दोस्त को फीडबैक दूँ तो दोस्ती ख़तरे में।

पीयर आईना: आदमी पर नहीं, पढ़ाने पर बात करो। "तुम ख़राब हो" नहीं; "इस सवाल के बाद बच्चों को थोड़ा समय मिलता तो क्या होता?" — ऐसा फीडबैक दोस्ती भी बचाता है और सीख भी।

पीयर आईना — शेर:

दूसरे की क्लास में केवल कमी न देख,
उस बहाने अपनी आदत का भी आईना देख।

मुरारी: कोई ब्यूटी फ़िल्टर?

पीयर आईना: सिर्फ़ ईमानदार मोड़।

स्वप्न-प्रवेश 6: एक्शन रिसर्च जासूस

एक्शन रिसर्च जासूस: (आवर्धक शीशा लेकर) समस्या बताओ।

मुरारी: बच्चे ध्यान नहीं देते।

जासूस: कौन-से बच्चे?

मुरारी: कुछ।

जासूस: किस समय ध्यान टूटता है?

मुरारी: जब मैं लगातार बोलता हूँ।

जासूस: निर्देश समझ आए थे? भाषा उनकी थी? काम उनकी रफ़्तार का था? वे भूखे, थके या डरे हुए तो नहीं थे? अपनी टीचिंग देखी?

मुरारी: आप समस्या बच्चों से उठाकर मेरी झोली में क्यों डाल रहे हैं?

जासूस: क्योंकि रिसर्च इलज़ाम नहीं लगाती, सुराग जोड़ती है। अंदाज़ा समस्या को नाम देता है, सबूत उसकी वजह खोलता है। छोटा बदलाव करो, असर देखो, फिर अगला क़दम तय करो।

स्वप्न-प्रवेश 7: स्कूल एक्सपीरियंस

[स्कूल की घंटी। बच्चे और स्कूल सुपरवाइज़र आते हैं।]

मुरारी: कल मैं लोकतंत्र पढ़ाऊँगा। मेरी प्लानिंग के हिसाब से सवाल पूछना।

बच्चा 1: सर, हमने आपकी प्लानिंग नहीं पढ़ी।

बच्चा 2: हम वही पूछेंगे जो समझ नहीं आएगा।

बच्चा 3: हमारा उदाहरण किताब से अलग भी हो सकता है।

स्कूल सुपरवाइज़र: स्कूल एक्सपीरियंस में कागज़ की तैयारी बच्चे, क्लास और स्कूल की हकीकत से मिलती है। यहाँ योजना की परीक्षा बच्चे लेते हैं, बच्चों की परीक्षा योजना नहीं लेती।

मुरारी: तुम सब मिलकर मेरा जीना मुश्किल कर रहे हो।

बच्चा 1: नहीं सर, हम बस आपकी स्क्रिप्ट से बाहर बोल रहे हैं।

मुरारी — शेर:

डर कहता है भाग चल, समझ कहती है ठहर,
काम वही सामने है, बदल रही है नज़र।

स्वप्न का परिवर्तन-गीत: हम फाइल नहीं, औज़ार हैं

एकल (टीएलएम भूत): मैं शोपीस नहीं, औज़ार हूँ,

कोरस: बच्चों के हाथ का काम हूँ।

एकल (जर्नल): दिन का किस्सा भर मत लिखना,

कोरस: अपने फ़ैसले भी देख ज़रा।

एकल (दरोगा): यूनिट प्लान नक्शा देता,

कोरस: रास्ता बच्चों संग बदलता।

एकल (मुंशी): एंड में केवल नंबर क्या हैं,

कोरस: रास्ते में भी हाल पता हो।

एकल (जासूस): सिर्फ़ "मुझे लगता है" मत बोलो,

कोरस: थोड़ा सबूत भी साथ में लाओ।

एकल (बच्चा 1): हम ख़ाली डिब्बे नहीं हैं,

कोरस: अपनी दुनिया साथ में लाते।

कोरस (सभी स्वप्न-पात्र):

हम फाइल नहीं, औज़ार हैं, मतलब हो तो धारदार हैं,
काम, फीडबैक, सोच और प्रैक्टिस — टीचर बनने के आधार हैं।

एकल (मुरारी): अब केवल जमा नहीं करूँगा,

कोरस: जो करूँगा, समझ के करूँगा।

एकल (मुरारी): बी.एड. का शिक्षण मेरा है,

कोरस: अपना हिस्सा खुद ही करूँगा!

[स्वप्न-पात्र मुखौटे उतारते हैं। मुरारी अचानक जागता है।]

मुरारी: सपना था... मगर डेडलाइन असली है। चलो, अब कम-से-कम समझकर करें।

दृश्य 6: बोझ से ज़िम्मेदारी तक

[तेज़ ताल पर छोटी-छोटी झलकियाँ।]

झलकी 1 — मॉनिंग असेंबली

सभा-संचालक: आज का सवाल मुरारी रखेंगे।

मुरारी: पहले मैं समझता था कि टीचर का काम बोलना है और बच्चों का काम सुनना। आज का सवाल है — किसी नए शहर में भाषा ने आपको कहाँ रोका या कहाँ मदद की? अपने साथी से एक अनुभव बाँटिए।

कथागायक 2: पहले मुरारी सभा से भागता था।

कथागायक 3: अब विचार रखता है और दूसरों को सुनता है। यह बदलाव भाषण की लंबाई से नहीं, सुनने की क्षमता से मापा जाएगा।

झलकी 2 — वर्कशॉप और पीयर फीडबैक

स्टूडेंट 1: यह रोल-कार्ड पढ़ने में मुश्किल है।

मुरारी: पहले दो साथियों से पढ़वाकर कठिन शब्द बदल देते हैं। पहले मैं सिर्फ रंग भर रहा था; अब बच्चे रास्ता चुनेंगे और वजह बताएँगे।

स्टूडेंट 2: तेरी इंस्ट्रक्शन बहुत लंबी थी। आधा ग्रुप बीच में ही खो गया।

मुरारी: अगले ड्राफ्ट में इसे तीन छोटे स्टेप में लिखता हूँ।

टीएलएम भूत: (दूर से) अब आया असली रंग!

मुरारी: भूत जी, दिन में आना हो तो इजाजत लेकर आया कीजिए।

झलकी 3 — स्कूल में पहला पाठ

[स्कूल की क्लास। सुपरवाइज़र पीछे बैठा है।]

मुरारी: बच्चों, आज लोकतंत्र पढ़ेंगे। पहले मेरी बात ध्यान से सुनिए।

[वह लगातार बोलता है, तीन ही बच्चों से बार-बार सवाल करता है और टीएलएम खुद चलाता है।]

बच्चा 1: सर, हमारे मोहल्ले में यह उदाहरण ऐसा नहीं होता।

मुरारी: अभी उदाहरण पूरा होने दो, आखिर में पूछना।

[घंटी।]

स्कूल सुपरवाइज़र: मुरारी जी, तैयारी साफ़ दिख रही थी। अब सुधार की बात — ज्यादातर समय आप ही बोले; सवाल तीन ही बच्चों से पूछे; दो बच्चे पूरे पाठ में चुप रहे; सामग्री सुंदर थी, पर उसे चलाया आपने; और बच्चे का अपना उदाहरण आखिर तक रोक दिया।

मुरारी: सर, कुछ अच्छा भी हुआ?

स्कूल सुपरवाइज़र: हुआ। विषय की समझ थी, बोर्ड व्यवस्थित था, आखिर में बच्चों से फीडबैक लिया। इसीलिए अगली बार और बेहतर कर सकते हैं। ये सुधार-संकेत आखिरी फ़ैसला नहीं, अगले पाठ की दिशा हैं।

मुरारी: ये लाल निशान बहुत तीखे हैं।

स्कूल सुपरवाइज़र: तीखापन इज़्जत के साथ हो तो धार बनाता है; बेइज़्जती के साथ हो तो मन बंद कर देता है। फीडबैक का काम मन बंद करना नहीं, अभ्यास खोलना है।

गीत: लाल निशान की नई दिशा

एकल (कथागायक 4): लाल निशान से मत घबराना,

कोरस: यह बेइज़्जती की रेखा नहीं।

एकल (कथागायक 4): कहाँ कमी है, साफ़ दिखाना,

कोरस: अगली राह से दूरी नहीं।

एकल (कथागायक 4): पहला लेसन डगमग जाए,

कोरस: दूजा थोड़ा सँवर जाएगा।

एकल (कथागायक 4): तीजे में तुम बच्चे सुनोगे,

कोरस: चौथा तुमको बदल जाएगा!

झलकी 4 — रिफ्लेक्टिव जर्नल

मुरारी: (लिखते हुए, ऊँची आवाज़ में) "आज मैंने देखा कि योजना पूरी करने की चिंता में मैं बच्चों की बात रोक देता हूँ। कुछ बच्चों को बार-बार चुना, बाकी को मौका नहीं दिया। अगली क्लास में सवाल पूछने के बाद रुकूँगा, ग्रुप बनाऊँगा और सामग्री बच्चों के हाथ में दूँगा।"

[पीछे से जर्नल का स्वप्न-रूप दाढ़ी दिखाकर अंगूठा उठाता है।]

झलकी 5 — अगला पाठ

बच्चा 2: सर, हमारे ग्रुप में मेरी बोली पर हँसी हुई।

मुरारी: अभी नया नियम बनाते हैं — बात विचार पर होगी, किसी की बोली पर नहीं।

स्कूल सुपरवाइज़र: हालात देखकर क्लास का नियम बदला। इसका असर जर्नल में ज़रूर लिखना।

मुरारी: बच्चों की प्रतिक्रिया भी लिखूँगा।

कथा-मंडली: मुरारी कोई जादुई आदर्श टीचर नहीं बन गया। वह गलती करता है, फीडबैक लेता है और बदलता है। किसी को अचानक महान बना देना आसान नाटकीय चाल है; धीरे-धीरे सीखते दिखाना कठिन है, पर ज़्यादा सच्चा।

दृश्य 7: सीटीईटी — कोचिंग, समझ और शिक्षकों के चेहरे

[घंटी। विद्यार्थी एडमिट कार्ड और प्रैक्टिस पेपर लेकर आते हैं।]

कथागायक 1: समय बीता। पाठ, योजना, स्कूल, जर्नल और वर्कशॉप के बीच सेंट्रल टीचर एलिजिबिलिटी टेस्ट आ गया।

कथागायक 2: यह पात्रता का एक पड़ाव था, नियुक्ति-पत्र नहीं; पर तैयारी को परखने का अच्छा मौका ज़रूर था।

स्टूडेंट 1: बाल-विकास और अधिगम — यह तो क्लास में पढ़ा है।

स्टूडेंट 2: समावेशन और विविधता — स्कूल एक्सपीरियंस में देखा भी है।

स्टूडेंट 3: आकलन और शिक्षण-विधि — असाइनमेंट्स ने काफ़ी कुछ याद करा दिया है।

मुरारी: प्रैक्टिस पेपर हल कर लेते हैं। अलग कोचिंग का टाइम कहाँ है? हमारा कॉलेज ही बिना नाम की लंबी कोचिंग निकला।

[दूसरी ओर त्रिपुरारी मोटी गाइड लिए कोचिंग में बैठा है।]

कोचिंग गुरु: सफलता का सूत्र — विकल्प "क" लंबा हो तो "ख" चुनिए; "सभी" लिखा हो तो भावनात्मक बुद्धि लगाइए; और शक हो तो पिछले साल की कुंजी याद कीजिए।

त्रिपुरारी: और कॉन्सेप्ट?

कोचिंग गुरु: वह एडवांस बैच में है। अलग फीस।

[परीक्षा-दृश्य। सवाल पढ़ते ही मुरारी के पीछे स्वप्न-पात्रों के चेहरे पल भर को दिखते हैं।]

मुरारी: सवाल — टीचर बच्चों को सक्रिय भागीदारी का मौका कैसे दे? अरे, टीएलएम भूत सामने क्यों नाच रहा है?

टीएलएम भूत: देखना नहीं, करना!

मुरारी: सवाल — चिंतनशील अभ्यास का उद्देश्य? मैम, एग्जाम हॉल में दाढ़ी मना है!

जर्नल का स्वप्न-रूप: अपना फ़ैसला देखो, अगला क़दम बदलो!

मुरारी: सवाल — आकलन का निर्माणात्मक उपयोग? मुंशी जी, मोहर धीरे लगाइए।

फॉर्मेटिव असेसमेंट मुंशी: रास्ते में सुधार!

[परिणाम।]

विद्यार्थी-मंडली: पास! पास!

कथागायक 3: नाटक की छोटी-सी दुनिया में बहुत-से साथी सफल दिखते हैं। असल ज़िंदगी में सफलता तैयारी, विषय और हालात पर निर्भर करती है। मंच सच को छोटा करके दिखाता है, मिटाता नहीं।

[त्रिपुरारी उदास आता है।]

त्रिपुरारी: मेरा नहीं हुआ। तूने कौन-सी गुप्त कोचिंग ली?

मुरारी: अलग कोचिंग नहीं ली। कोर्स दोहराया, प्रैक्टिस पेपर किए। असली तैयारी क्लास, असाइनमेंट, फीडबैक, स्कूल और बच्चों के

बीच हुई। सवाल पढ़ते ही मेरे टीचरों और उन भूतों के चेहरे सामने तैर रहे थे।

त्रिपुरारी: मेरा कोचिंग पैकेज इतना महंगा था।

मुरारी: महंगा होना समझ की गारंटी नहीं।

त्रिपुरारी: कोई जुगाड़ बता।

मुरारी: जायज़ जुगाड़ तीन हैं — कॉन्सेप्ट समझो, अभ्यास करो और गलती देखकर फिर पढ़ो। बैठ, साथ पढ़ते हैं।

त्रिपुरारी: तू मेरा मज़ाक तो नहीं उड़ाएगा?

मुरारी: तूने मेरा बहुत उड़ाया है। व्याज समेत बदला लेने का मौका है, पर अभी पढ़ना ज़्यादा ज़रूरी है।

युगल-गीत: कोचिंग कहाँ ली?

एकल (त्रिपुरारी): कोचिंग कहाँ ली, बता दे यार,

कोरस: कौन-सी ट्रिक, कौन-सा हथियार?

एकल (मुरारी): क्लास में सवाल, स्कूल में बच्चे,

कोरस: फीडबैक, प्रैक्टिस — नोट्स थे सच्चे।

एकल (त्रिपुरारी): मेरे नोट्स तो ढेर हज़ार,

कोरस: कॉन्सेप्ट में फिर क्यों अँधियार?

एकल (मुरारी): चल, अब जोड़ें तार से तार,

कोरस: टीचर बनना लंबा सफ़र, यार!

[दोनों साथ पढ़ते हैं। अगले परिणाम पर त्रिपुरारी मुस्कराता है।]

त्रिपुरारी: इस बार हो गया — अपने जवाबों से।

मुरारी: बस, अब सर्टिफिकेट और समझ, दोनों सँभालकर रखना।

दृश्य 8: दो डिग्रियाँ, बढ़ता बिल और टीचर भर्ती

[मंच दो हिस्सों में। एक ओर मुरारी को डिग्री मिलती है। दूसरी ओर धनू लाल और चुन्नू लाल लंबा बिल लेकर त्रिपुरारी के पास आते हैं।]

धनू लाल: बधाई हो, त्रिपुरारी जी! आपकी डिग्री तैयार है। बस कुछ फ़ाइनल चार्ज बाकी हैं।

त्रिपुरारी: एडमिशन के समय दो लाख कहा था।

चुन्नू लाल: वह एडमिशन-टाइम का भाव था। अब डिग्री-टाइम का रिश्ता है।

त्रिपुरारी: और यह लेट फीस? लेट किसने किया?

चुन्नू लाल: आपके सवालों से पेमेंट में जो देर हुई, उसकी।

बिल-गीत: डिग्री पास, भाव झ़ास

एकल (धनू लाल): साइन का चार्ज, बाइंडिंग चार्ज,

कोरस: नो-ड्यूज़ का त्योहार!

एकल (धनू लाल): मॉडरेशन की नई सुविधा,

कोरस: रिलीज़ का अलग बाज़ार!

एकल (धनू लाल): जैसे-जैसे मंज़िल नज़दीक,

कोरस: लौटना होता कठिन।

एकल (धनू लाल): ज़रूरत जितनी गहरी होती,

कोरस: भाव हो जाता उतना सघन!

एकल (त्रिपुरारी): दो लाख से शुरू कहानी,

कोरस: दोगुना हुआ हिसाब!

एकल (त्रिपुरारी): डिग्री हाथ में आने वाली,

कोरस: जेब दे रही जवाब!

त्रिपुरारी: आपने पढ़ाया कम, अर्थशास्त्र ज़्यादा समझाया।

धनू लाल: हम मल्टीडिस्प्लिनरी संस्थान हैं।

त्रिपुरारी — शेर (खुद से):

पैसा गया तो फिर कमाऊँ, मौका कहाँ से लाऊँ,

काम हुआ मेरे बदले, सीख कहाँ से पाऊँ।

[दूसरी ओर मुरारी अपनी डिग्री को इज़्ज़त से देखता है।]

मुरारी: दो साल पहले इसे मंज़िल समझता था। अब लगता है यह एंट्री गेट है। क्लास सामने आएगी, तब सीख की असली परीक्षा होगी।

चयन अधिकारी: (घंटी बजाकर) स्टेट टीचर भर्ती के आवेदन खुले हैं। एलिजिबिलिटी, सब्जेक्ट, लिखित परीक्षा और डॉक्यूमेंट वेरिफिकेशन के नियम लागू होंगे।

[आवेदन, परीक्षा और इंतज़ार की छोटी झलक।]

चयन अधिकारी: मुरारी और त्रिपुरारी — दोनों सिलेक्टेड। पोस्टिंग संयोग से एक ही स्कूल में।

त्रिपुरारी: देखा! आखिर पहुँचे तो दोनों एक ही जगह।

मुरारी: जगह एक है, दोस्त। अब क्लास बताएगी कि हम साथ क्या लाए हैं।

दृश्य 9: एक स्कूल, एक क्लास और पढ़ाने के दो तरीके

[बोर्ड पर विषय: "लोकतंत्र और भागीदारी"। वही बच्चे दो पीरियड में बैठते हैं।]

भाग 1: त्रिपुरारी की क्लास

त्रिपुरारी: किताब खोलो, पेज बयालीसा। रोहन, पहला पैराग्राफ पढ़ो। बाकी उँगली रखकर साथ चलें।

रोहन: "लोकतंत्र वह शासन-व्यवस्था है जिसमें..."

त्रिपुरारी: ज़ोर से! पीछे तक आवाज़ जानी चाहिए।

बच्चा 1: सर, अगर बहुमत गलत फैसला करे तो?

त्रिपुरारी: यह सवाल सिलेबस से बाहर है। परिभाषा अंडरलाइन करो।

बच्चा 2: सर, क्या हम अपने स्कूल का उदाहरण दे सकते हैं?

त्रिपुरारी: एग्ज़ाम में परीक्षक तुम्हारे स्कूल को नहीं जानता। गाइड वाला उदाहरण लिखो।

बच्चा 3: सर, मुझे यह लाइन समझ नहीं आई।

त्रिपुरारी: दस बार लिखोगे तो अपने-आप समझ आ जाएगी।

[एक बच्चा फुसफुसाता है; त्रिपुरारी स्केल मेज़ पर बजाता है।]

त्रिपुरारी: शांति! रोहन पढ़ता रहे, बाकी प्रश्न एक से पाँच कॉपी में लिखें। शांति ही अच्छी पढ़ाई की पहचान है।

[वह कुर्सी पर बैठ जाता है। बच्चे चुपचाप लिखते हैं। घंटी।]

बच्चों का अंतर-गीत: लौटता सवाल

एकल (बच्चा 1): हम भी कुछ कहना चाहते थे,

कोरस (बच्चे): शब्द हों तक आकर लौटे।

एकल (बच्चा 1): उत्तर पहले तय रखा था,

कोरस: अपने सवाल अकेले छूटे।

एकल (बच्चा 1): क्लास के बाहर रंग बहुत हैं,

कोरस: भीतर मन क्यों फीका हो?

एकल (बच्चा 1): कोई इतना भरोसा दे दे,

कोरस: गलत सवाल भी ठीक तो हो!

भाग 2: मुरारी की क्लास

[मुरारी रोल-कार्ड और चार रंगीन लिफ़ाफ़े लेकर आता है।]

मुरारी: किताब अभी बंद रहेगी। स्कूल में एक ख़ाली मैदान है। कुछ लोग उसे खेलने के लिए चाहते हैं, कुछ गाड़ियाँ खड़ी करने के लिए, कुछ सभा के लिए और कुछ पेड़ लगाने के लिए। फैसला कैसे होगा?

बच्चा 1: प्रिंसिपल तय कर दें।

मुरारी: एक तरीका यह भी है। और?

बच्चा 2: सबकी राय ली जाए।

बच्चा 3: छोटे बच्चों की ज़रूरत अलग होगी।

बच्चा 4: मैदान का टाइम बाँट सकते हैं।

मुरारी: चार ग्रुप बनेंगे। ये रोल-कार्ड लो — स्टूडेंट काउंसिल, स्कूल मैनेजमेंट, पैरेंट ग्रुप और मोहल्ले के लोग। प्रस्ताव बनाओ, वजह बताओ और दूसरे ग्रुप से एक सवाल पूछो।

[बच्चे ग्रुप में काम करते हैं; मुरारी उनके बीच घूमकर सवाल करता है, जवाब नहीं थोपता।]

मुरारी: ग्रुप 1, तुम्हारे प्रस्ताव में दिव्यांग बच्चों की पहुँच कहाँ है?

बच्चा 1: यह तो हमने सोचा ही नहीं। रास्ते के लिए जगह जोड़ते हैं।

मुरारी: ग्रुप 2, क्या सिर्फ़ ज़्यादा वोट मिल जाना हमेशा न्याय होगा?

बच्चा 2: नहीं। कम संख्या वाले ग्रुप की ज़रूरत भी सुननी होगी।

बच्चा 5: सर, हमारे ग्रुप में सहमति नहीं बनी।

मुरारी: असहमति की वजह लिखो। लोकतंत्र में मतभेद होना हार नहीं; बिना सुने फैसला कर देना समस्या है।

[चारों ग्रुप प्रस्ताव रखते हैं; साझा टाइम-टेबल बनता है।]

मुरारी: अब किताब खोलो। परिभाषा पढ़कर बताओ कि हमारी गतिविधि में भागीदारी, प्रतिनिधित्व और न्याय कहाँ दिखे।

बच्चा 1: सर, अब परिभाषा सिर्फ़ रटने वाली लाइन नहीं लग रही।

बच्चा 3: पर हमारे ग्रुप के दो बच्चे बोल ही नहीं पाए।

मुरारी: अच्छा ऑब्ज़र्वेशन। अगली बार उनकी भूमिका पहले तय करेंगे। यह बात मेरी जर्नल के लिए लिखवा देना।

[घंटी। बच्चे उत्साह से बाहर जाते हैं। त्रिपुरारी दरवाज़े पर खड़ा है।]

त्रिपुरारी: तेरी क्लास में आवाज़ बहुत थी, फिर भी बात विषय से बाहर नहीं गई। मेरी क्लास में शांति थी, पर शायद सिर्फ़ मेरा कंट्रोल चल रहा था।

मुरारी: हर आवाज़ सीख नहीं होती और हर शांति खराब नहीं होती। फ़र्क़ इससे पड़ता है कि बच्चे क्या सोच रहे हैं, क्या कर रहे हैं और क्या समझ रहे हैं।

त्रिपुरारी: मेरी डिग्री भी बी.एड. है। फिर तेरे पास इतने विकल्प कहाँ से आए?

मुरारी: कागज़ ने हमें आवेदन का हक़ दिया; तैयारी ने क्लास में विकल्प दिए। तेरी संस्था ने तेरे हिस्से के काम अपने हाथ में लेकर तेरे हिस्से की सीख भी ले ली। मेरे कॉलेज ने काम मेरे सामने रखा — पहले मैं उनसे भागा, फिर उन्हीं से विकल्प बनाना सीखा।

त्रिपुरारी: अब देर हो गई?

मुरारी: टीचर की सीख नौकरी मिलते ही बंद हो जाए, तो देर हम दोनों करेंगे। कल तू मेरी क्लास देख, परसों मैं तेरी देखूँगा। एक छोटी जर्नल शुरू कर।

त्रिपुरारी: दाढ़ी वाली आएगी?

मुरारी: ईमानदारी से लिखेगा तो दाढ़ी की ज़रूरत नहीं पड़ेगी।

कथागायक 1 — शेर:

एक कागज़ ने दोनों को दरवाज़ा तो दिया,

कथागायक 2: कक्षा ने मगर भीतर का फ़ासला बता दिया।

दृश्य 10: बाज़ार कॉलेज के बाहर भी रहता है — और त्रिपुरारी की पहली नई कोशिश

[अगला दिन। त्रिपुरारी कुछ कार्ड लेकर घबराया हुआ आता है। मुरारी पीछे सुपरवाइज़र की तरह नहीं, साथी की तरह बैठा है।]

त्रिपुरारी: बच्चों, आज... किताब बाद में खोलेंगे।

बच्चा 1: सर, आपकी तबीयत तो ठीक है?

त्रिपुरारी: बिल्कुल ठीक। आज चार कार्ड हैं। इन पर अलग-अलग हालात लिखे हैं। बताओ, इनमें फ़ैसला सही है या नहीं, और क्यों।

[एक ग्रुप उलझ जाता है; समय ज़्यादा लगता है।]

त्रिपुरारी: जल्दी करो... नहीं, एक मिनट। बताओ, दिक्कत कहाँ है?

बच्चा 2: सर, कार्ड की भाषा समझ नहीं आई।

त्रिपुरारी: ठीक है। इसे आसान करते हैं।

बच्चा 3: हमारे ग्रुप में सबको भूमिका नहीं मिली।

त्रिपुरारी: अगली बार भूमिकाएँ अलग से लिखेंगे।

[घंटी।]

त्रिपुरारी: गतिविधि आधी गड़बड़ा गई।

मुरारी: और तूने पहली बार बच्चों से पूछा कि दिक्कत कहाँ हुई। यह गड़बड़ी नहीं, अगली तैयारी की शुरुआत है।

त्रिपुरारी: (छोटी जर्नल में लिखते हुए) "आज मैंने देखा कि कार्ड की भाषा कठिन थी और सबके लिए भूमिका नहीं बनी। अगली बार पहले दो बच्चों से कार्ड पढ़वाकर भाषा जाँचूँगा और ग्रुप में ज़िम्मेदारियाँ बाँटूँगा।"

[पीछे से जर्नल का स्वप्न-रूप दाढ़ी दिखाता है, फिर मुस्कराकर उतार देता है।]

[चारों कथागायक आगे आते हैं; स्वप्न-पात्र अपने प्रतीक लिए पीछे खड़े होते हैं।]

कथागायक 1: कहानी को यहाँ प्राइवेट कॉलेज की हार और सरकारी कॉलेज की जीत बताकर ख़त्म करना आसान है।

कथागायक 2: और गलत भी।

कथागायक 3: झुमरी तलैया का वह काल्पनिक सरकारी कॉलेज याद है?

कथागायक 4: जहाँ फाइलें पढ़ती थीं, टीचर नहीं; सामग्री घूमती थी, समझ नहीं।

मुरारी: मैं वह कहानी शिकायत की तरह नहीं, मॉडल की तरह सुना रहा था। पैकेज कॉलेज में नहीं गया, फिर भी उसकी भाषा साथ ले आया था — "अटेंडेंस फॉर्मलिटी है", "जर्नल में कुछ भी लिख दो", "स्कूल एक्सपीरियंस में साइन हो जाएँ, बस।"

त्रिपुरारी: मैंने सुविधा ख़रीदी, तूने सोचा कि सरकारी में कुछ होता ही नहीं।

मुरारी: रास्ते अलग थे, बीमारी एक — डिग्री को शिक्षक-शिक्षा से अलग मान लेना।

स्टूडेंट 1: रेगुलर कॉलेज मौका देता है; विद्यार्थी चाहे तो उस मौके को भी कॉपी-पेस्ट बना सकता है।

स्टूडेंट 2: स्कूल जाकर भी बच्चा न देखा, तो स्कूल एक्सपीरियंस बस-यात्रा और हस्ताक्षर बनकर रह जाएगा।

फॉर्मेटिव असेसमेंट मुंशी: और कामों का पहाड़ खड़ा कर देना भी हल नहीं। बिना समय, मकसद, फीडबैक और दोबारा कोशिश के, पहाड़ सिर्फ़ छाया देता है, दिशा नहीं।

स्कूल सुपरवाइज़र: कसौटी सीधी है — क्या इस प्रक्रिया से विद्यार्थी-शिक्षक बच्चे को ज़्यादा ध्यान से देखना, सुनना और समझना सीखता है? क्या वह अपना तरीका बदलना सीखता है?

बच्चा 3: कमी फाइल में नहीं दिखती। वह हमारी क्लास में दिखती है।

त्रिपुरारी: मेरी संस्था ने मेरे हिस्से का काम कर दिया। उसी के साथ मेरे हिस्से की गलतियाँ भी छीन लीं — और उनसे मिलने वाली सीख भी।

[तीन सेकंड का मौन। हल्की ताल।]

अंतिम गीत: सीख का हक़ मत बेचो

एकल (कथागायक 1): बोर्ड निजी हो या सरकारी,
कोरस: ख़ाली क्लास एक बीमारी!

एकल (कथागायक 1) : डिग्री बेचो मत बाज़ार में,
कोरस : सीख का हक मत छीनो।
एकल (कथागायक 1) : जिस हाथ में बच्चों का कल हो,
कोरस : उस हाथ को खाली न छोड़ो।

एकल (कथागायक 2) : आज अगर तैयारी खोई,
कोरस : कल क्लास में असर दिखेगा।
एकल (कथागायक 2) : टीचर खुद ही आधा पहुँचा,
कोरस : बच्चा पूरा कैसे सीखेगा?

एकल (मुरारी) : रेगुलर होना नाम नहीं है, रोज़ स्वयं को जाँच सक्ते,
कोरस : बच्चे की दुनिया से जुड़कर अपनी पद्धति बदल सक्ते।
एकल (त्रिपुरारी) : दाम चुकाकर काम कराया, उसका घाटा अब पहचाना,
कोरस : जिस अभ्यास से बचता आया, उसी ने टीचर था बनाना।
एकल (बच्चा 1) : हम भविष्य की फोटो नहीं हैं, आज सबालों के संग आते,
कोरस : जो टीचर सुनना सीख रहा हो, उसके साथ अर्थ बनाते।

कोरस (सभी) :
रगड़ाई वह जो धार बनाए, घिसाई सिर्फ थकाती है,
काम वही जो समझ बढ़ाए, तभी ट्रेनिंग काम आती है।

एकल (कथागायक 1) : चले मुरारी-त्रिपुरारी,
कोरस : अब न राह रहे बाज़ारी!
एकल (कथागायक 1) : डिग्री से आगे बढ़ना होगा,
कोरस : टीचर रोज़ ही बनना होगा!

[गीत थमता है। मुरारी दिशा-बोर्ड की ओर देखता है।]

मुरारी : (धीमे, आत्मीय स्वर में) जिस कॉलेज के श्मशान घाट के पास होने पर मैंने मज़ाक किया था, वहीं मेरी मरी हुई जिज्ञासा जागी। वहीं मेरी फॉर्मलिटी और शॉर्टकट वाली सोच का अंत हुआ, और मुझे सार्थक जीवन की राह मिली — सार्थक शिक्षण के लिए।

त्रिपुरारी : और मुझे समझ आया कि काम से बचना समय बचाना नहीं था; मैंने अपने सीखने के मौके गँवा दिए थे।

कथागायक 4 : डिग्री नौकरी के दरवाज़े पर दस्तक दे सकती है।

बच्चा 1 : और क्लास का दरवाज़ा?

मुरारी : वह समझ, अभ्यास, संवेदना और लगातार सीखने से खुलता है।

सभी कलाकार : शिक्षक बनना खत्म हो चुका पाठ नहीं — ज़िंदगी भर चलने वाला शिक्षण है।

[मंच के एक ओर बड़ी डिग्री, दूसरी ओर बच्चे रोल-कार्ड, किताब, जर्नल और टीएलएम लिए खड़े हैं। मुरारी और त्रिपुरारी डिग्री को इज़्ज़त से उठाते हैं और साथ-साथ बच्चों की ओर बढ़ते हैं।]

— नाटक समाप्त —

नाटक का निष्कर्ष

नाटक का निष्कर्ष यह है कि डिग्री दोनों मित्रों के हाथ में एक-सी थी, पर उसके भीतर की यात्रा अलग थी। एक संस्था ने विद्यार्थी के हिस्से का काम स्वयं करके उसकी सीख छीन ली। दूसरी ने काम, संवाद, अभ्यास, गलती और प्रतिपुष्टि (feedback) के रास्ते उसे शिक्षक बनने का अवसर दिया।

फिर भी नाटक किसी पर स्थायी ताला नहीं लगाता। मुरारी शिक्षक बन नहीं चुका है; उसने शिक्षक बनते रहने की राह पकड़ी है। त्रिपुरारी स्थायी रूप से पीछे नहीं छूटा है; उसने अब सीखना शुरू किया है।

नाटक अपने पक्ष की भी आलोचना करता है। झुमरी तलैया का सरकारी कॉलेज बताता है कि नाम के साथ 'सरकारी' जुड़ जाना गुणवत्ता की गारंटी नहीं है। मुंशी की रगड़ाई और घिसाई वाली बात चेताती है कि नियमित कॉलेज में भी बिना तालमेल और सार्थक प्रतिपुष्टि के काम का पहाड़ 'जुल्म' बन सकता है। मुरारी की स्वीकारोक्ति दिखाती है कि 'सब फॉर्मलिटी है' वाली भाषा नियमित कॉलेज के भीतर भी पहुँच जाती है।

नाटक इन तीन पंक्तियों पर ठहरता है :

"डिग्री नौकरी के द्वार पर दस्तक दे सकती है; क्लास में प्रवेश शिक्षक की समझ, तैयारी, संवेदना और सतत सीख से मिलता है।"

"शिक्षक-शिक्षा का उद्देश्य विद्यार्थी-शिक्षक का काम पूरा कर देना नहीं, उसे अपना काम समझकर करने योग्य बनाना है।"

"डिग्री सुरक्षित रखें; शिक्षक को निरंतर विकसित करते रहें।"

विमर्श : पाठ्यचर्या के घटक, उनके उद्देश्य और दो राहें

खंड 4 के साक्ष्य और नाटक के चित्रण को साथ रखने पर एक बात बार-बार सामने आती है: पाठ्यचर्या के घटक तब प्रभावहीन होते हैं जब वे अपने उद्देश्य से कट जाते हैं। तालिका 2 हर घटक का उद्देश्य, सुविधा-पैकेज वाले मॉडल में उसका रूप और नियमित महाविद्यालय में उसकी भूमिका एक साथ रखती है। अंतिम स्तंभ बताता है कि नाटक में वह घटक किस पात्र के रूप में आया।

तालिका 2 : पाठ्यचर्या के घटक, उनके उद्देश्य और नाटक की दो राहें

घटक	पाठ्यचर्या में उद्देश्य	सुविधा-पैकेज वाले मॉडल में (त्रिपुरारी)	नियमित महाविद्यालय में (मुरारी)	नाटक का प्रतीक
नियमित उपस्थिति और कक्षा-संवाद	प्रश्न, तर्क और सहभागिता से पेशेवर समझ बनाना	"अटेंडेंस अपडेटेड" ; उपस्थिति जगह की बंदिश से 'आज़ाद'	सुबह की सभा, प्रश्न बनाना, असहमति सहित समूह-प्रस्तुति	अटेंडेंस-प्रहरी
पाठ्य-पठन और चिंतन	लेखक से संवाद, सहमति-असहमति, अनुभव से जोड़	पढ़ाई ही अनुपस्थित	"जानकारी नोट कर ली" से "सोचा" तक	चिंतनशील सर
शिक्षण-अधिगम सामग्री	बच्चों के हाथ में करके सीखने का साधन	दुकान से खरीदा चार्ट, बाहरी परीक्षक के लिए	कम लागत की सामग्री, जिसे बच्चे जोड़ते-तोड़ते हैं	टीएलएम का भूत
चिंतनशील डायरी	अपने निर्णयों और गलतियों की ईमानदार समीक्षा	"मेरे बिना बहुत गहराई से चिंतन कर रहा है"	"मैं बच्चों की बात रोक देता हूँ"; सुधार की योजना सहित प्रविष्टि	दाढ़ी वाली जर्नल
इकाई-योजना और पाठ-योजना	उद्देश्य, गतिविधि और आकलन में तालमेल; लचीली दिशा	योजना संस्थान तैयार करता है	"सुधार कर फिर जमा करें"; बच्चों के सवाल पर रास्ता बदलना	प्लानिंग दरोगा
सतत (रचनात्मक) आकलन	सीखने के दौरान कठिनाई पहचानकर प्रतिपुष्टि	अंत में अंक और प्रमाणपत्र	मसौदा, प्रतिपुष्टि, संशोधन; रगड़ाई बनाम	फॉर्मेटिव असेसमेंट मुंशी

	और सुधार		घिसाई	
सहपाठी- अवलोकन	दूसरों की कक्षा से सीखना, सम्मानजनक प्रतिपुष्टि	अनुपस्थित	"इंस्ट्रक्शन बहुत लंबी थी" से तीन छोटे चरणों तक	पीयर ऑब्जर्वेशन का आईना
क्रियात्मक शोध	अनुमान के बजाय साक्ष्य; छोटा बदलाव और उसके असर की जाँच	अनुपस्थित	"कौन, कब, क्यों?"; अपनी पद्धति की जाँच	एक्शन रिसर्च जामूस
विद्यालय- इंटरैक्शन (न्यूनतम 20 सप्ताह)	वास्तविक बच्चों, विविधता और विद्यालय- संस्कृति से जुड़ना	"स्कूल के सामने गुप फोटो" और प्रमाणपत्र	पहला पाठ लड़खड़ाया ; सुपरवाइज़र की प्रतिपुष्टि से अगला सुधरा	स्कूल सुपरवाइज़र और बच्चे
समावेशन और विविधता	हर बच्चे की भाषा, गति और गरिमा का सम्मान	अनुपस्थित	"बात विचार पर होगी, बोली पर नहीं"; दिव्यांग बच्चों की पहुँच का प्रश्न	स्कूल के बच्चे

टिप्पणी: उद्देश्य वाला स्तंभ NCTE विनियम 2014 के घटकों और इस खंड में उद्धृत साहित्य के आधार पर संक्षेपित है। अंतिम तीन स्तंभ नाटक के चित्रण पर आधारित हैं।

प्रभावहीनता का निर्माण

चिंतनशील अभ्यास की अवधारणा पेशेवर को अपने काम पर विचार करते हुए सीखने वाला मानती है (Schön, 1983)। रचनात्मक आकलन पर हुए शोध के अनुसार सीखने के दौरान दी गई प्रतिपुष्टि उपलब्धि बढ़ाने का प्रभावी साधन है (Black & William, 1998)। तालिका 2 दिखाती है कि इन्हीं उद्देश्यों वाले घटक सुविधा-पैकेज वाले मॉडल में कागज़ी उत्पाद बन जाते हैं, और खंड 4 के साक्ष्य इसी प्रवृत्ति की पुष्टि करते हैं। इसका अर्थ है कि पाठ्यचर्या अपने-आप प्रभावहीन नहीं होती; प्रक्रिया की जगह उत्पाद रख देने से उसे प्रभावहीन बना दिया जाता है।

नियमितता आवश्यक है, पर्याप्त नहीं

मुरारी नियमित महाविद्यालय में था, फिर भी आरंभ में वही भाषा लेकर आया जो सुविधा-पैकेज के बाज़ार में प्रचलित है। Mondal (2020) की समीक्षा में विद्यार्थी-शिक्षकों का प्रतिकूल दृष्टिकोण संस्थान के प्रकार से परे दिखाई दिया। इससे संकेत मिलता है कि नियमित उपस्थिति आवश्यक है, पर पर्याप्त नहीं। जब तक किसी घटक का उद्देश्य विद्यार्थी को स्पष्ट नहीं होता, तब तक वह उसे बोझ के रूप में अनुभव कर सकता है। नाटक की स्वप्न-अदालत यही करती है: वह हर घटक को उसके उद्देश्य से दोबारा जोड़ती है। 'हम खाली डिब्बे नहीं हैं' वाला गीत उस बैंकिंग-शिक्षा की आलोचना से जुड़ता है, जिसमें विद्यार्थी को केवल ज्ञान जमा करने का पात्र माना जाता है (Freire, 1970)।

रगड़ाई और घिसाई का अंतर

नियमित महाविद्यालय की भी जिम्मेदारी बनती है। एक ही सप्ताह में सारी समय-सीमाएँ, अंकों तक सीमित प्रतिपुष्टि और बच्चों से कटे कार्य

वही अनुभूति पैदा कर सकते हैं जिसका लाभ बिना उपस्थिति वाली डिग्री का बाज़ार उठाता है। नाटक इसे रगड़ाई और घिसाई के भेद से व्यक्त करता है: रगड़ाई वह है जो धार बनाए, घिसाई वह जो केवल थकाए। रचनात्मक आकलन का शोध भी इसी ओर संकेत करता है कि प्रतिपुष्टि तभी सार्थक है जब उसके बाद सुधार का अवसर मिले (Black & William, 1998)।

प्रतियोगी परीक्षा और नियमित प्रशिक्षण

नाटक में मुरारी नियमित प्रशिक्षण के बाद केंद्रीय शिक्षक पात्रता परीक्षा (CTET) पहली बार में उत्तीर्ण करता है, जबकि महँगी कोचिंग के बावजूद त्रिपुरारी पहली बार सफल नहीं होता। यह प्रसंग किसी सामान्य सांख्यिकीय दावे का प्रमाण नहीं है; नाटक स्वयं दर्ज करता है कि वास्तविक जीवन में सफलता तैयारी, विषय और परिस्थिति पर निर्भर करती है। प्रसंग का विश्लेषणात्मक अर्थ यह है कि नियमित प्रशिक्षण और परीक्षा की तैयारी को परस्पर विरोधी मानने वाली धारणा जाँच की माँग करती है। प्रस्तावना में जिस 'जुलूम' की अनुभूति का उल्लेख हुआ, वह इसी धारणा से जुड़ी है, और उसकी अनुभवजन्य जाँच आगे के शोध का प्रश्न है।

निष्कर्ष एवं सुझाव

उपलब्ध साक्ष्यों के आधार पर यह निष्कर्ष निकलता है कि दो वर्षीय बी.एड. की प्रभावहीनता अवधि की नहीं, अर्थ की समस्या है। अवधि दोगुनी होने के बाद भी जब पाठ्यचर्या के घटक अपने उद्देश्य से कटकर कागज़ी पूर्ति बन जाते हैं, तब दो वर्ष भी गुणवत्ता सुनिश्चित नहीं कर पाते।

पहले शोध-प्रश्न का उत्तर यह है कि NCTE विनियम 2014 ने अवधि, उपस्थिति और विद्यालय-इंटरैक्शन के मानदंड बढ़ाए, पर उनके सत्यापन का आधार शपथ-पत्र, संकाय-सूची, PAR और निरीक्षण-रिपोर्ट जैसे अभिलेखों पर टिका दिखाई देता है। इन्हीं अभिलेखों की औपचारिक पूर्ति के उदाहरण 2024 और 2026 की रिपोर्टों में मिलते हैं (Choudhury, 2024; Shukla, 2026)। इसलिए समस्या का केंद्र मानदंडों की कमी से अधिक उनके सत्यापन का आधार है।

दूसरे शोध-प्रश्न का उत्तर यह है कि बिना उपस्थिति वाली डिग्री का बाज़ार उन्हीं घटकों को सबसे सरलता से बेच पाता है जो कागज़ी साक्ष्य छोड़ते हैं: पाठ-योजना, दत्त-कार्य, शिक्षण-अधिगम सामग्री, चिंतनशील डायरी और इंटरैक्शन-प्रमाणपत्र। ये वही घटक हैं जिन पर पाठ्यचर्या की पेशेवर प्रकृति सबसे अधिक टिकी है।

तीसरे शोध-प्रश्न का उत्तर नाटक के सरकार अनुदानित शिक्षा महाविद्यालय के उदाहरण से उभरता है। वहाँ पाठ्यचर्या तब पेशेवर तैयारी बनती है जब उपस्थिति के साथ भागीदारी हो, हर काम का उद्देश्य विद्यार्थी को दिखे, प्रतिपुष्टि के बाद सुधार और पुनः प्रयास का समय मिले, समय-सीमाओं में तालमेल हो और हर घटक अंततः विद्यालय और बच्चे से जुड़े। उत्कृष्ट शिक्षक-शिक्षा कार्यक्रमों पर हुए अध्ययन भी पाठ्यक्रम और विद्यालय-अभ्यास के घनिष्ठ जुड़ाव को केंद्रीय मानते हैं (Darling-Hammond, 2006)। ऐसा कार्यक्रम विद्यार्थी को डिग्री के साथ वह देता है जो कोई सुविधा-पैकेज नहीं दे सकता: गलती करने, उसे देखने और सुधारने का सुरक्षित अवसर।

उत्तरदायित्व के प्रश्न पर साक्ष्य तीन दिशाओं की ओर संकेत करते हैं। पहली दिशा नियामक और संबद्धता देने वाले विश्वविद्यालयों के सत्यापन-तंत्र की है, जिसकी सीमाएँ संबंधित अधिकारियों के कथनों और सूचना के अधिकार से प्राप्त अभिलेखों में दर्ज हैं (Choudhury, 2024; Shukla, 2026)। दूसरी दिशा उन संस्थानों की है जिनके बारे में उपस्थिति के प्रबंधन और इंटरैक्शन के बिना परीक्षा की अनुमति के विवरण सामने आए (Choudhury, 2024; Khan, 2023)। तीसरी दिशा भर्ती-संरचना की है, जो इस लेख के विश्लेषण के अनुसार अभ्यास-घटकों को चयन से असंबद्ध बनाकर मॉर्ग-पक्ष को प्रभावित कर सकती है। विद्यार्थी की भूमिका भी इस शृंखला में है, पर उपलब्ध साक्ष्य बताते हैं कि उसके निर्णय इन्हीं संरचनाओं के भीतर बनते हैं।

सुझाव

1. नियामक संस्थाओं के लिए: निरीक्षण अभिलेखों से आगे बढ़कर कक्षा तक पहुँचे। अधोषिक्त निरीक्षण, कक्षा और विद्यालय-इंटरनेट का प्रत्यक्ष सत्यापन, तथा संकाय-सदस्यों की विशिष्ट पहचान के साथ सार्वजनिक सूची हो, ताकि एक ही नाम अनेक कॉलेजों में दर्ज न हो सके। PAR के ऑकड़े भी सार्वजनिक हों।
2. संबद्धता देने वाले विश्वविद्यालयों के लिए: परीक्षा में बैठने की पात्रता उपस्थिति और इंटरनेट की वास्तविक पूर्ति से जुड़ी रहे। इंटरनेट का प्रमाणन मेज़बान विद्यालय करे, और बिना उपस्थिति की डिग्री का दावा करने वाले विज्ञापनों पर कार्रवाई हो।
3. भर्ती एजेंसियों के लिए: लिखित परीक्षा के साथ कक्षा-प्रदर्शन या शिक्षण-संचयिका (portfolio) जैसे आकलन जुड़े, ताकि अभ्यास-घटक चयन में भी अर्थ रखें।
4. नियमित महाविद्यालयों के लिए: सत्र की शुरुआत में हर घटक का उद्देश्य स्पष्ट किया जाए। समय-सीमाओं का साझा कैलेंडर बने, प्रतिपुष्टि अंकों के बजाय सुधार पर केंद्रित हो, और पात्रता-परीक्षा की तैयारी से पाठ्यचर्या का संबंध स्पष्ट किया जाए।
5. विद्यार्थी-शिक्षकों के लिए: बी.एड. को डिग्री की खरीद नहीं, पेशे की तैयारी के रूप में देखा जाए। जो काम दूसरे से कराया जाता है, उसकी सीख भी दूसरे के पास रह जाती है।
6. आगे के शोध के लिए: विद्यार्थी-शिक्षकों की धारणाओं, इंटरनेट के वास्तविक घंटों और भर्ती के बाद कक्षा-व्यवहार पर प्राथमिक अध्ययन आवश्यक हैं। यह नाटक बी.एड. महाविद्यालयों में मंच-संवाद रंगमंच (forum theatre) की परंपरा में मंचित करके संवाद-आधारित हस्तक्षेप के रूप में भी परखा जा सकता है (Boal, 1974/1979)।

दो वर्ष की अवधि आवश्यक शर्त है, पर्याप्त नहीं। डिग्री को सुरक्षित रखते हुए शिक्षक को निरंतर विकसित करना ही शिक्षक-शिक्षा का वास्तविक उद्देश्य है। यही इस शोध-लेख और इस नाटक का साझा निष्कर्ष है।

संदर्भ-सूची

Barone, T., & Eisner, E. W. (2012). *Arts based research*. SAGE Publications.

Black, P., & Wiliam, D. (1998). Inside the black box: Raising standards through classroom assessment. *Phi Delta Kappan*, 80(2), 139-148.

Boal, A. (1979). *Theatre of the oppressed* (C. A. McBride & M.-O. L. McBride, Trans.). Urizen Books. (Original work published 1974)

Careers360. (2025a). *NCTE to relaunch 1-year B.Ed, M.Ed with NTA-run admission test; drafts rules on syllabus*. <https://news.careers360.com/ncte-rules-1-year-b-ed-masters-education-nta-admission-test-syllabus-eligibility-teacher-training-itep-degree>

Careers360. (2025b). *NCTE's one-year B.Ed, M.Ed plan will dilute teacher training, produce 'mere technicians': Experts*. <https://news.careers360.com/ncte-one-year-b-ed-m-ed-rules-regressive-teacher-training-course-masters-education-degree-syllabus-eligibility-admissions-itep>

Centre for Policy Research. (n.d.). *Justice Verma Commission on teacher education: Vision of teacher education in India, quality and regulatory perspective, Volume 1* [Repository record]. Indian Education Repository. <https://cprindia.org/?p=45547>

Choudhury, P. R. (2024, September 26). *Empty classrooms, dubious admissions: Murshidabad's B.Ed college boom a cause*

for concern. Careers360. <https://news.careers360.com/west-bengal-b-ed-college-teacher-training-bsaeu-d-el-ed-courses-ncte-approved-murshidabad-empty-classrooms-admission>

Darling-Hammond, L. (2006). *Powerful teacher education: Lessons from exemplary programs*. Jossey-Bass.

Deccan Herald. (2018, February 23). *NCTE de-lists thousands of teacher education institutions*. <https://www.deccanherald.com/content/661148/ncte-lists-thousands-teacher-education.html>

EducationWorld. (n.d.). *Delhi: Valuable legacy*. <https://educationworld.in/delhi-valuable-legacy/>

Freire, P. (1970). *Pedagogy of the oppressed* (M. B. Ramos, Trans.). Herder and Herder.

Gupta, S. (2026, April 1). *NCTE reopens PAR portal for teacher training institutes to submit past reports, admission eligibility criteria*. Careers360. <https://news.careers360.com/ncte-reopens-par-portal-for-teacher-training-institutes-to-submit-past-reports-admission-eligibility-criteria-fee-structure>

India Legal. (2026, September 4). *Supreme Court upholds NCTE's authority to mandate annual performance reports from teacher education institutes*. <https://indialegallive.com/constitutional-law-news/courts-news/supreme-court-upholds-ntes-authority-to-mandate-annual-performance-reports-from-teacher-education-institutes/>

Khan, A. I. (2023). *Dialogue paper 1: Teacher education*. All India People's Science Network, Higher Education Desk. <https://resources.aipns.net/sites/default/files/2023-02/DialogPaper1-TeacherEducation-AIPSNHrEdDesk.pdf>

Lok Sabha. (2011, August 17). *Unstarred question no. 2565: B.Ed. and D.Ed. colleges*. Ministry of Human Resource Development, Government of India. <https://eparlib.nic.in/bitstream/123456789/603599/1/106177.pdf>

Lok Sabha. (2013, February 27). *Unstarred question no. 673: Justice Verma Committee*. Ministry of Human Resource Development, Government of India. <https://eparlib.nic.in/bitstream/123456789/635276/1/135334.pdf>

Mohanlal Sukhadia University. (2017). *Bachelor of Education (B.Ed.) two-years programme: Syllabus for 2017-18 and 2018-19*. Department of Education. https://www.mlsu.ac.in/.../syllabus/ug/11397_DoE_B.Ed_2%20Yr_SULLABUS.pdf

Mondal, A. (2020). *Attitude of teacher-educators and pupil-teachers towards the two-year B.Ed. programme: A review-based evaluation*. *Issues and Ideas in Education*, 8(2), 39-48. <https://doi.org/10.15415/iiie.2020.82004>

- National Council for Teacher Education.
(n.d.-a). *Introduction*.
<https://web.ncte.gov.in/page/introduction>
- National Council for Teacher Education.
(n.d.-b). *NCTE regulations*.
<https://ncte.gov.in/Website/regulation.aspx>
- National Council for Teacher Education.
(2009). *National curriculum framework for teacher education: Towards preparing professional and humane teacher*.
https://ncte.gov.in/Website/PDF/NCFTE_2009.pdf
- National Council for Teacher Education.
(2025, May 30). *Withdrawal order under Section 17 of the NCTE Act, 1993, on non-submission of performance appraisal report* (File No. NCTE/2025/NRC/PAR/ORDER/UP-1203).
<https://web.ncte.gov.in/notifications/view/2925>
- Press Trust of India. (2026, March 23). *Centre rules out bringing back one-year BEd course, Education Ministry informs Lok Sabha*. Careers360.
<https://news.careers360.com/centre-rules-out-bringing-back-one-year-bed-course-education-ministry-informs-lok-sabha>
- Rajput, J. S. (2021, February 5). Show no tolerance to education mafia. *The Pioneer*.
<https://www.dailypioneer.com/2021/columnists/show-no-tolerance-to-education-mafia.html>
- Regional Institute of Education, Bhubaneswar. (n.d.). *Two year Bachelor of Education (B.Ed.) programme (CBCS)*. National Council of Educational Research and Training.
<https://www.riebbs.ac.in/images/documents/B-Ed-2year-cbcs.pdf>
- Saldaña, J. (2011). *Ethnotheatre: Research from page to stage*. Left Coast Press.
- Sam Higginbottom University of Agriculture, Technology and Sciences. (2015). *Syllabus for Bachelor of Education (B.Ed.): Two year B.Ed. programme (semester mode) 2015-2017*. Allahabad School of Education.
<https://shuats.edu.in/syllabus/BED.pdf>
- Schön, D. A. (1983). *The reflective practitioner: How professionals think in action*. Basic Books.
- Shukla, S. (2026, October 2). *NGO files complaint over discrepancies in affiliation process of Tamil Nadu private teacher education colleges*. Careers360.
<https://news.careers360.com/tamil-nadu-private-teacher-education-colleges-ngo-files-complaint-over-discrepancies-in-affiliation-process-in-person-inspection>
- University of Kalyani. (n.d.). *Two year B.Ed. programme under NCTE Regulations, 2014*.
https://klyuniv.ac.in/wp-content/uploads/2022/01/b.ed_.pdf